षटऋतुकाव्यसंग्रह

---*---

अर्थात्–जिसमें

वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिरछओंऋतुओंके कवित्त व सवैया ऐसे २ अत्युत्तम लहलहे रँगीले परमचुहचुहे रसीले, अपने रसिकमित्रों व रंगीन तबीयतवाले महाशयों के चित्तविनोदार्थ बड़ेपरिश्रमसे छांट२कर लिखेगयेहैं जिस के अवलोकनसे सुजनों के चित्त महा आनन्द को प्राप्त होजाते हैं

उसको

मुझ आपलोगों के चरणसेवक कृपाभिलाषी हफ़ीज़ुल्लाहख़ां सांड़ी निवासी सेकण्डमास्टर सन्दीला स्कूल ज़िला हरदोई मुल्क अवध साबिक़ अफ़्सर मुदर्रिस मदरसा बन्नापुर ने संग्रह कर निर्मित किया

---*---

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेख़ाने में छपा

सितम्बर सन् १८८९ ई० ॥

प्रथम बार तादाद १५००

षटऋतुकाव्यसंग्रह का

सूचीपत्र

इति ॥

षटऋतुकाव्यसंग्रह

भूमिका

दोहा ॥

वन्दौंराधारमणपद कोटिकामकमनीय।
गोपसुताकेप्राणधन रसिकरासरमनीय ॥

प्रथम उस करुणा वरुणालय परब्रह्म परमात्मा सर्व्वलोकेश्वर जगदाधार प्रभुको साष्टांग दण्डवत्कर, उसके भेजेहुये नानाप्रकारके अवतारोंको नमस्यजान विशेष उसअपने परमप्रिय इष्टदेव कृपासिन्धु दीनबन्धु रसिकशिरोमणि श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्द व श्रीलाड़िलीब्रजेश्वरी वृषभानुनन्दनी राधिकाजीमहारानी जगन्माताको सच्चे दीनानाथ पतितपावन दुःखनिवारणसमर्थ प्रणामकर, सर्व्वपूज्य देवताओं महाशय ऋषियों मान्यवर मुनियोंके आगे शिरझुका अपने कृपासागर महाउजागर यशस्वी गुणखानि परोपकारी दयानिधान सर्व्व महात्मा सुजनों निपट प्रवीण परमसुजान महाशयोंकी सेवा में परम आधीनतासे करजोरि सविनय क्षमामाँगि यह दीन कुछ अपने समाचार कहा चाहता है अर्थात् मुझ महादीन परमआधीन चरणसेवक शुभचिन्तक कृपाकांक्षीका लघुनाम हफ़ीज़ुल्लाहखां पिताका नाम मोहम्मदबाज़खां पितामहका नाम मोहम्मदबशारतखां क़ौम अफ़ग़ान काकरज़यी क़स्बा सांडी महल्ला ऊंचाटीला ज़िला हरदोई मुल्के अवध निकट दरियाय गर्रा का निवासी हूं सन् १८५७ ई० में मेराजन्म हुआ ५ वर्ष की अवस्था से फ़ारसीपढ़ना आरम्भ किया तदनन्तर सर्कारी पाठशाला में शिक्षापातारहा सन् १८७५ ई०

में नौकरहोकर बन्नापुर परगना बंगरके सर्कारी पाठशाले में भेजागया जोकि बहुत बड़ा एक प्रसिद्धग्राम है यहां ११ वर्ष पर्य्यन्त रहनाहुआ श्रीठाकुर मेहरवानसिंह साहब नम्बरदार और उनके छोटे भाई नरपतिसिंह के सत्संग में यह इतने दिवस बड़े सुख व चैन से कटे काव्य देखने सुनने की अभिलाष यहींसे बढ़ी इन्हीं मित्रों के साथ तीर्थस्नान और सुजन महात्मा पुरुषों के दर्शनों के अवसर भी बहुप्रकार लगतेरहे बहुधा गंगास्नान, नैमिषारण्य, मिश्रित, हत्याहरण आदि तीर्थस्नानों पर बन्नापुरसे निकटहोने के कारण बराबर जाना होतारहा काव्यआदि के पढ़ने लिखने की ओर से चित्तको बड़ीहीरुचि उत्पन्नहोतीगई यहांतक कि बहुधा मित्रोंके कहने सुनने से कई एक उत्तम उत्तम संग्रह बनाडाले जिनके नाम इसके अन्त विज्ञापन में लिखेहैं जितनीपुस्तकें हमने बन्नापुर और संदीले में संग्रहकीं उनमें हमको परमप्रियाशिष्य महिपालसिंह, दिक्पालसिंहआदि विद्यार्थियोंसे बहुतहीसहायता मिलतीरहीहै सिवा इसके इसपुस्तक के संग्रहकरने में हमारे कृपासागर मान्यवर परमउजागर श्रीठाकुर रघुनाथसिंह साहब नम्बरदार मौज़े थावर ज़िला लखनऊ की ओरसे बहुत कुछ सहायतामिली है और उन्हींकी दयादृष्टिके कारण यह संग्रह बनकर तैयार भी होगया सच्चिदानंद परमेश्वर हमारे परमकृपाल दीनदयाल श्री ठाकुर साहबको दिन दूना रात्रि चौगुना फुलाये फलाये और चिरंजीवकरे फिर जब सन् १८८६ ई० में दश वर्ष के उपरान्त बन्नापुरसे मदरसा क़स्बे संदीलामें हम बदलकर भेजे गये उस समय वहांके सब निवासियोंने जिनसे हमको अपने घरका ऐसा बरताव व लगाव होगया था हमारे साथ इस तरह स्नेहको निबाहा कि वह लिखे नहीं लिखाजासक्ता दीर्घ कालतक संदीला अच्छा न लगा धीरे २ वह घबराहट जातीरही चित्तलगने लगा यहां के

लोगोंसे हेल मेल होचला बस्तीको अच्छीतरहसे देखा भाला मालूम हुआ कि इस ज़िला हरदोईमें किन्तु बहुधा अवधके सब ज़िलोंमें ऐसा क़सबा कोई भी न होगा मनुष्य यहांके सब रँगीले छबीले अच्छे रसिक,पढ़े लिखे सुजन,प्रेमी,स्नेही, हितकारी,धनवान्,खुशपोशाक,रईसवज़ादार, और बुद्धिमान प्रत्येक भांतिके कारीगर मौजूद कोई२ रईस इस तरहके अत्युत्तम परोपकारी, कृपासिंधुदयानिधान,दीनबंधुहैं कि जिनकी प्रशंसा करना छोटामुँह बड़ीबात है विशेष उनमेंसे श्री सर्व्व शुभोपमायोग्य महाशय श्री राजा कुँवर दुर्गाप्रसाद साहब आनरेरी मजिस्ट्रेट व ताल्लुकेदार और विद्यासागर परमउजागर श्री कुँवर नरिंद्रनाथ साहब बहादुर आनरेरी मजिस्ट्रेट व ताल्लुकेदारहैं जिनके हित व स्नेहके सागरकी थाह नहींहै॥ प्रत्येक जन इन महाशयोंके प्रीतिरूपी बंधनमें ऐसेबँधे हैं कि निकल नहीं सकते श्रीजगदीश्वर दीर्घकालतक सुशोभित रक्खे तीसरे गुणखानि सर्व्वविद्यालंकृत परमसुजान सैयद मज़हरअली साहब रईस व सेक्रेटरी म्यूनी सिपिल बोर्ड हैं जिनकी तारीफ़ मैं कहांतक करूं ईश्वरने उनको ऐसा सुजन पुरुष बनायाहै कि कहेनहीं कहाजासक्ता सिवा इसके श्री हुजूर मौलान अब्दुल क़ादिर साहब बहादुर तहसीलदार संदीलाकी मुहब्बत व मुरव्वतका बयान अगर पूरा२ किया जावै तो यह भूमिका अलग एक पुस्तक होजावै नेक सूरत, उत्तम स्वभाव,मिलनसार,न्यायकारी, सत्यबचनी,परोपकारक,दयावान,शीलसागर,ऐसे कि लिखे नहीं लिखाजाता संदीलेमें बहुत कालतक विराजमानरहे ता०२मार्चस०१८८८ ई० को बिल्ग्राम तबदील होकर पधारे उनके चलते समय कोई सुजन पुरुष ऐसा न था कि न रोताहो संदीला रेलवेस्टेशन पर उस दिन एक ऐसाभारी जमाव शहरके लोगोंका होगया था कि जिसका वर्णन नहींहोसक्ता आपहीकी कृपा

दृष्टिसे श्रीदेवीजी के तालाबतक शहर से एक पक्की सड़क अत्युत्तम बनवादीगईहै ताकि जो स्त्री पुरुष वहां देवीपूजन या स्नानादिको जायें सुपासमें पहुंचजायें संदीलेका बाज़ार और उसके दोनों ओरकी रंग बिरंगी पक्की एकमंज़ली दोमंज़ली दुकानें बराबर एक मीलतक जो ४ बजेसे ११ बजे रात्रीतक अपनी चहल पहलसे बड़े २ शहरों के चौकोंको लजातीहैं इनहीं हमारे तहसीलदार साहब बहादुर की आज्ञानुसार बनकर तैयार हुई हैं ऐसे सर्वगुण खानि सुजन पुरुष बहुत कम देखने में आतेहैं आपकी सुशीलता इस दरजा बढ़ीहुई है कि जिसने बड़े २ बैरियों के शिर नीचे करदिये सचहै कि जितने सच्चे और अच्छे पुरुष हैं उनमें ऐसेही उत्तम गुण होतेहैं ईश्वर प्रत्येक सुजनको ऐसीही सुमतिदेवे ॥

तदनंतर में अपने श्रीसर्व्वेशुभोपमायोग्य महाशय श्रीबाबू सालिकराम साहबमिश्र इटावानिवासी असिस्टण्टसरजन संदीला अस्पताल के शील और गुण आदि को कहांतक वर्णनकरूं जिनके प्रेम और स्नेह की नदीकी थाहही मिलना महाकठिन है स्त्री पुरुष बालकहो या तरुण वृद्ध धनवान् हो, या निर्द्धनी सबसे वही मनोहर प्रेममिलेहुए सुबचन बोलना मानो सहस्रों का धन दियेदेते हैं सब संदीला उनकी शील-रूपी रस्सी में इसवक्त ऐसा बँधाहुआ है कि कुछ कहा नहीं जाता आंखबनाने में आप ऐसे उस्ताद हैं कि सैकड़ों अन्धों को मुफ्तमें आँखिआराकरदिया चारोंओर से बीसोंआंखके अन्धे लकड़ी टेकते दूसरे के सहारे आये और यहां से अकेले सुयशगाते बेखटके मकान को राही हुए ग़रीबोंको आनेजाने का ख़र्च भी मिलता है मकान भी रहने को दियाजाता है बहुधा समाचारपत्रोंमें आपके आंखबनाने का विज्ञापनभी छपाहै सच तो यहहै कि जितने दयावान् उत्तम पुरुष होतेहैं उनको सबअच्छा ही कहतेहैं ॥

अब मैं संदीले के कोई कोई मकानों का हाल भी कुछ लिखनाचाहताहूं वह यहहै कि सबसे प्रथम हाफ़िज़ व चौधरी शौकतअली साहबकी मसजिद द्वितीय मुन्शीफ़ज़लरसूल साहबका मक़्बरा और उसके चारोतरफ़ का बाग़ देखनेके योग्य है तृतीय लालताप्रसादका बनवाया हुआ पक्का तालाब है जोकि एकअति रमणीक और मनोहर स्थानमें श्रीशीतला जी देवी के मन्दिर के निकट बनाहुआ है और हरसाल यहां निहायत धूमधाम के साथ कंसलीला का मेला भी होता है जिसमें रात्रिसमय कईदिन बराबर रासलीला ऐसीउत्तमताके साथ कीजातीहै कि देखनेवाले जहांके तहां पत्थरके चित्र की नाईं होकर रहजाया करते हैं अब मैं अपने परमप्रिय महाशयों और रसिक सुजनों से सविनय प्रार्थना करताहूं कि मेरीभूल चूक को कृपाकर क्षमाकरैं मैं बास्तव में एक महादीन और अज्ञान जनहूं यह संग्रह रँगीले मित्रों और ईश्वरभक्त सुजन पुरुषों के दिलबहलाने के निमित्त रचा गया है यदि मुझे बहुप्रकार मालूम है कि बहुधा हमारे मित्र इसे देखकर डाह की अग्निमें जल जो कुछ कि जीमें आवेगा विक्षिप्त और पागलोंकी नाईं बकैंगे और जितने अच्छे महात्मा सुजनहोंगे वह यदि भला न कहेंगे तो अपने प्यारे मुख से किसीकी पीठपीछे बुराई भी न करेंगे क्योंकि प्रसिद्धबातहै कि अच्छे पुरुष सबको अच्छा और दुर्जन दुष्ट सबको बुराही बतलायाकरतेहैं हमारे ईश्वरभक्त और महात्मा सुजन जब इस नदीरूपी संग्रहमें श्रीगोबर्द्धनधारी कृष्णमुरारी और उनकी प्यारी श्री लाड़िलीजी महारानी की बहु प्रकारकी लीलारूपी और सुयश वर्णन कवित्तोंकी सुखदायक मौजोंको उठतेहुये देखैंगे तो अवश्य उनका उत्तमचित्त गद्गद हो मुझ चरणसेवक और कृपापात्रकी याददिलाये बग़ैर न रहेगा जिसको मैं अपना उत्तम भाग समझताहूं अब मैं

इस भूमिका को समाप्तकर सब छोटे बड़ों अच्छे बुरोंसे क्षमा मांगताहूं और चाहताहूं कि मेरी भूल चूकको कुछ ध्यान में न लावें॥

दो० पूरणग्रन्थभयोसुखद शिवाशिवहिशिरनाय।
चतुरजननकोसुखपरद मूरखकोदुखदाय॥

आप सबलोगों का चरणसेवक
हफ़ीजुल्लाहख़ां सेकण्डमास्टर
संदीला स्कूल ज़िला हरदोई
(अवध)
ता० १ एप्रिल सन् १८८६ ई०



षटऋतु काव्यसंग्रह॥

बसन्तऋतुके कवित्त व सवैया १॥

कवित्त॥ फूलेहैं रसाल नवपल्लव बिशाल बनजूही औ पलाश मल्ली आदि बहुको गनै। कूजत बिहँग पिक कोकिलादि एक सङ्ग गुंजत मलिन्द बन बीथिकानि मैं घनै। बहत समीर मन्द शीतल सुरभि धीर रहत न योग युत मुनिगनके मनै। एरे ब्रजरंग ऐसेसमै रहो सङ्ग नतु दहन अनङ्ग सिषु गोपिकानके तनै १ सुमन अनंत फूले बिपिन लसन्त पौन सौरभ बहत भौंर गुंजै रसमन्त है। सुतरु फलन्त कूक कोकिल कलन्त तजै ध्यान मुनि सन्त जहां केलिकोअगंतहै। सबै रसवन्त औ वियोगिनिको गन्त जहँ रतिही को तंत तोख सुकवि भनन्तहै। बेधे रतिकन्त पायतरुणी यकन्त अब जाहु कित कन्तऋतु भूपति बसन्तहै २ सङ्गकी सहेली रहोपूजत अकेली शिवातीर यमुनाके बीर चमक चपाईहै। हैंतौ आई भागतडरत हियरातें घरै तेरे शोच

करी सोहिं शोाच्चित सवाई है। बंचिहै वियोगी योगी ज्ञानि सरदार ऐसी कराठते कलित कूक कोकिल कढाई है। बिपिन समाजमें दराजसी अवाज होति आजु महाराज ऋतुराज की अवाई है ३ सुखद समीर सीर रूखी ह्वै चलन लागी घटिचली रैन कछु शिशिर हिमंतकी। फूलैलागे फूल फेरि बौरै बन आम लागे कोकिला कुहूकेलागीं मातीमदमन्तकी। हरीचन्द काम की दुहाईसों फिरन लागी आवै लागी सुधासुधि प्यारे कन्तकी। जानीपरै आजु बिरहीन की सिरागी अब आयो चाहैं रातैं फेर दुःखद बसन्तकी ४ बन बन आगिसी लगाइकै पलाशफूले सरसों गुलाब गुल्लाला कचनारो हाय। आइगयो शिरपैंचढाय मैनबाणनिज बिरहिन दौरि दौरि प्राण न सम्हारोहाय। हरीचन्द कोइलैं कुहूकी फेर बनबन बाजै लागयोजग फेरिकाम को नगारो हाय। दूरप्राण प्यारो काको लीजिये सहारो अबआयो फेरिशिरपै बसन्त वज्रमारो हाय ५॥ सवैया ॥ सखि आयो बसन्तऋतुन को कन्त चहूंदिशि फूलिरही सरसों। वर शीतलमंद सुगंध समीरसतावन हारभयो गरसों। अब सुन्दर सांवरो नन्दकिशोर कहै हरिचन्द गयो घरसों। परसों को बिताय दियो बरसों तरसों कब पांय पिया परसों ६ ॥ कवित्त ॥ आयो परवाना पात डार छांह तम्ब तानि कोकिलादिवान बोर तोर पतनावैं चुनि। छडीदार कौलिया पहार देति आठों याम बायूफूल सेजिया मजेजिया बिछावै

तुनि। झगडाखालसेमर सुगन्ध हरिकारा वर बाजत नगारा जो मलिन्दगणगावै धुनि। शबद दराज भोदिवाकरजू पक्षिनके दक्षिणके देशऋतुराज आज आवै सुनि ७ बिरही दुखारी कामकीन्हो अधिकारी चन्द्रीकगण जारिदेश कियोहै देवारीसों। पेड़पत्तझारी कल कैलि बोली भारी शुभ सौरभ पसारीछीन छायो फूलवारी सों। भनत दिवाकरजू छाकेभये कोकिल बसन्ती सारी युवती शरीरपैन्है प्यारी सों। फरैलागे बिटप बेलाके फूल फूलैलागे व्यापै लगे सबमें बसन्त बायुदारी सों ८ पुनि शरशालक मरिन्दन लपटिकर दक्षिणासे आइ शुभलागत शरीरमें। मन्दमन्द चालसे मरालके लजात तात वपुह्वै पवित्रतानहाये गङ्गनीरमें। सुखद सुहावन सुहावन सुनीश मन नारी सों नवोढ़ा गतिचलै अति धीरमें। भनत दिवाकर सुधासों निशि सनी प्रात जानी क्या बहार है बसन्तके समीर में ९॥ सवैया॥ आज सुभायनहीं गई बाग बिलोकि प्रसूनकि पांतिरही पगि। ताहिसमै तहँआयेगोपाल तिन्हैं लखि औरो गयो हियरो ठगि। पै द्विजदेव न जानि पर्योधौं कहांत्यहिकालपरे अँशुवा जगि। तूजोकहै सखिलोनो स्वरूप सो मों अँखियान में लोनी गई लगि १०

फूलनदे अबै टेसू कदम्बन अम्बन बौरन छावन देरी। री मधुमत्त मधूकन पुंजन कुंजन शोर मचावन देरी। क्योंसहिहै सुकुमारि किशोरि अरी कलकोकिल गावन देरी। आवतही बनिहै घर कन्तहि बैरी बसन्तहि

आवन हेरी ११ नीलबसन्त उठे अकुलाय सुने कल कोकिलकी किलकारी।भाँवरैंसीभरैंसाँवरे साँवरे होत निछावर ते सहचारी । देव दुहूं को दुहूं दुरिके रँग दै पठई अँगअंग उजारी । केसरियाखुलै नन्दकिशोर किशोरी कि केसर की रँगी सारी १२ मदमाती रसाल कि डारनपै चढी आनँद सों यों बिराजतीहैं। कुल जानिकि कानि करैं न कछू मन हाथ परायहि मारती हैं । कोऊ कैसी करै द्विज कहै नहिं नेको दया उर धारती हैं। अरी कोलिया कूकि करेजनकी किरचैं किरचैं कियेडारतीहैं१३ भोरिसे कौने लिये बनबाग ये कौनेजु आंबनकी हरिआई। कोयल काहे कराहति है बन कौने चहूं दिशि धूरि उडाई । कैसो नरेश बयारि बहै यह कौन धौं कौनेसों माहुरनाई । हाय न कोऊ तलाश करै ये पलाशन कौने दवारि लगाई १४ आयोबसन्त दहन्त सखीघर आयेन कन्त न पाये सँदेशन । शंभु कहैं पथिकाये सबै अरु कोऊ बिदेशी रहे न बिदेशन । चन्द्रमुखी ढुगते अँशुवा ढुरिआनि पडे कुचयाही अँदेशन। मानोमयंक सरोजन में मुकताहल लैलै चढावैं महेशन १५ ॥ कवित्त ॥ जब ते हमारे प्राणप्यारे हैं पधारे उत धीर नहिं धारे जात पीरहियमेंजगें । शीतलसमीर भयोतीर कालिन्दी के तीर बीरबलबीर बिन नीर ढुगते डगें। केशरी समान जब बिरह परै हैं भान योग ज्ञान ये गयन्दयूथ तबहीं भगैं । बोली कोकिलान की करै हैं शूलहूल हमें ऊधो

ये कदम्बन के फल गोली से लगें १६ औरै भांति कुंजन में गुंजरत भौंर भीर औरै डौर झौरन में बौरन के ह्वै गये। कहैं पदमाकर सो औरैभांति गलियान छलिया छबीले छल औरै छबि छ्वैगये। औरै भांति बिहग समाज में अवाजहोत ऐसे ऋतुराज के न आज दिनद्वैगये। औरै रस औरै रीति औरैराग औरैरंगऔरै तन औरै मन औरैबन ह्वैगये १७ पात बिनकीन्हे ऐसी भांतिगणबेलिन के परत न चीन्हेजे ये लरजत लुंजहैं। कहैंपदमाकर बिसासीया बसन्तकेसो ऐसेउतपात गात गोपिनके भुंजहैं। ऊधोयह माधोसों सँदेशो कहिदीजो भले हरिसौं हमारे ह्यां न फूले बन कुंज हैं। किंशुक गुलाब कचनार औ अनारनकि डारनपै डोलत अँगारन के पुंजहैं १८॥ सवैया ॥ बूझतुहैा कहावाकी दशा भुवनेश जु बात वृथा बहिजायगी। सांची कहेपतिया-हुनहोंनहिं कांची कछू हमसों कहिजायगी। आश नहीं बचिबेकी अबै पर प्यारीजऊरहते रहिजायगी। बीस बिसेबन फूले पलाशन देखि अँगारन सों दहिजायगी १९ कोकिल कूकि कलोलकरैं कलकोइल कूजै नि-कुंजन मैं। कीर उदोत कपोतके गोत छके मदसों रव गुञ्जनमैं। किंशुककेतकिकुन्दजुही बिकसो भुवनेशजु पुंजन मैं। काहे न ऐसी समै अलितोहिं सोहातअहै रसभुंजन में २०॥ कवित्त ॥ कालित कमण्डल कमल कलिकाके करि किंशुक कुसुमबर अम्बर सुहायोहै। ठौर ठौर भौंरनकी श्रेणीजप माल मौर सजै हैं रसाल

जटाजूटसों बढ़ायोहै। ग्रिष्यन के गीतकीर कोकिल कपोतसंग पढ़ै ह्वै उमंगचहूं ओरशोर छायोहै। कन्त बनमाली को पठायो लालीसों लसन्त आलीरी बस-न्तधनि सन्त बनिआयोहै २१ गानकोकिलान के सु-बाँसुरीकि तानसनोसजें बनमाल फूलजालये अनन्त हैं। सोहत ममद अलि कोकनद पै झपात मुख पै प्रभात जनु लोचन लसन्त हैं। उड़त परागपट पीत फहरात सोईहियो हहरात बिरहिनिको तुरन्त हैं। आयोरी बसन्त श्यामाकन्त को बनाय बेष देखो बिलसन्त यह कैसो छबिवन्तहैं २२ ललितलता के नवपल्लव पताके सजें बजें कोकिलान के सुकलगानकेंनिशान। ठौरठौर मौरन पै भोंरभीर झौरकरें दौर दौर गावत नवीन की तौरगान। फूलनकी सैन सैन सैनसीकरैंहैं चैन शी-तल सुगन्धमन्द मारुतचलतबान। सजिके समाजसाज बिरही बिकल काज एहो ब्रजराजऋतुराज आज हरैं प्रान २३ जामें पंचसुर धुनि सुखमा बिराजि रही देई सुबिनोदमें सुवास सदागतिहै। कुन्दनकिकला चहुंओर झलामलै होति मनो उमापति की उदोत ज्योति अति है। माधव सेवैं रसाल बिकसे बिशाल बेला ठौर ठौर जामें शुकवाणी हुलसतिहै। किधैां सुखराशीहै बसन्त ऋतु दीनयाल किधैां अबिनाशी पुरीकाशी बिलसति है २४ सबकुल यूथ मिलि बन्धु जीव सोहतहैं कसरमें अम्बरसुखगञ्जनबासहै। करें अलिगान फिरैं भोंरी सुद भरी सङ्ग चहूंओरआवत गुलाबकी सुबासहै। सजैंअति

मुक्त द्युति झालरति काननमें कुन्दन की कला फैलि रही आसपासहै। मौरहैरसालरतें शाखाद्विज दीनद्याल दयाहको समाजधौं बसन्तको प्रकासहै २५ सोहैशुक बाणी चहुँओर मंजु कानन में षटपदी धुनिप्रात बेला बिलसन्तहैं। केतकिअशोकपरसेवत सुधीरद्विज बोलत रसाल सुमनस बिकसन्तहैं। तरुणीके देखनको नैनन नचावें जित माधवी सुरतियुत बात बिकसन्त हैं। उपजें बिशाल रुचिदेखतही दीनद्याल किधौं सन्तसभा किधौं शोभित बसन्तहैं २६ ॥ सवैया ॥ नागरसेहैं खड़ेतरु कोऊलिये कर पल्लवमें फलफूलन। पाँवड़े साजिरहेहैं कोऊ कोउ बीथिन बीच पराग दुकूलन। फूल झरैं द्विजदेवके ऊपर काननमाहँ कलिन्दजाकूलन। आगममें ऋतुराजकेआज सबैंबिधिखोये सबैंनिजशूलन२७ कवित्त ॥ औरैं भांति कोकिल चकोर ठौर ठौर बोलैं औरैभांति शबद पपीहनके ह्वैगये। औरैभांति पल्लव लिये हैं वृन्द वृन्द तरु औरैं छबि पुंज कुंज कुंजन उनै गये। औरैंभांति शीतल सुगन्ध सन्दडोलैपौन द्विजदेव देखत न ऐसेफलह्वैगये। औरैरीति औरैरङ्ग औरैं साज औरैं संग औरैं बन औरैं छन औरैं मन ह्वैगये २८ ॥ सवैया ॥ देखतही बन फूले पलाश बिलोकतही कछु भौंर कि भीरन। बावरीसी मति मेरी भईलखि बावरी कंजखिले घटे नीरन। भाजिगयो कढ़ि ज्ञानहियेते न ज्ञानि परयो कब छोड़िकैधीरन। कन्धन कौनके लोचन होयँ पराग सने हरसात समीरन २९ ॥ कवित्त ॥

फेरि वैसे सुरभि समीर सरसान लागे फेरि वैसे वेलि मधुभारन उनैगई। फेरि वैसे चहँकि चकोर चहूं ओर बोले फेरि वैसे कोलिया कि कूकन चहूंभई। द्विजदेव फेरि वैसे गुनी भौंर भौरैं फेरि वैसेही समय आयो आनँद सुधामई। फेरि वैसे अंगन उमंग अधिकानेफेरि फेरि वैसे कछूक मति मेरी भोरी ह्वैगई ३० फेरि वैसे वेलिमन्द डोलन चहूंघा लगीं फेरि वैसे फूलनपै मन्दझरि लागीहौन। फेरि वैसी भूमिभई बासित सुवासन सों फेरिवैसे पूरितपरागन भयेहैं पौन। द्विज-देव फेरिवैसे सोहे तरु पुंज कुञ्जकुञ्जनमें फेरिवैसे मोर ह्वैगयेहैं मौन। फेरि वैसे पलटि गईहैं गृह वापिकाऊ फेरिवैसे पलटि गये हैं चारों ओर भौन ३१ फेरिवन बौरेमन बौरेसे करनलागे फेरिमन्द सुरभि समीरहवै कितन्तगो। फेरिधीर नाग्रान पलाशनमें लागी आगि बहुरि बिरहिजूह डरपि इकन्तगो। द्विजदेव देखि इन भाइन धराते फेरि जानिये कहांधौं भाजि सोहि-मन्त अन्तगो। फेरिउर अन्तर ते डगरि गयोई ज्ञान फेरि बन बागनमें बगरि बसन्तगो ३२ ॥ सवैया ॥ फूले निकुंजघने द्रुम मंजुल भृङ्ग लतानन तान कहे। अतिशी-तल मन्द सुगन्धघने चहुँ तीक्षणतीर समीरवहे। धुनि कोकिल कीर कपोतनके भरकानन कानन जातसहे। उरशालत शूलसमूह प्रताप बसन्तमें कन्तबसन्तरहे ३३ नित हेरत बाट थकीं अँखियां दुहूं पावक से अँशुवान बहे। दिनके गिनते घिस छोर गये जियरा अब धीर

अधीरगहे। कहियोइतनोई सँदेशो भटू बिछुरेभलकैतब काहकहे। अब पाहन सों हियरोके प्रताप बसन्त में कन्त बसन्तरहे ३४॥ कवित॥ डोलेहैं तमालपत्र पांवड़े अवाई सुनि गावतहैं गुणीजनइतउतछाहके। फूलिउठे कुन्दये मलिंद वेग चाय उठे कूकिउठीं कोकिला कलापीचित्तचाहके। प्यारेआमबौरिउठे पक्षीगण दौरि उठे चांदनी चँदोवा जबलागे नरनाहके। गिलमैं गुलाबनकि गद्दीचारु चम्पनकि बाग बीच डेरे हैं बसन्त बादशाहके ३५ तालनपै तालपै तमालनपै आलन पै लालमाल बालपै रसाल सरसोपरैं। पढ़ै कविरामचंद्र कुन्दकन्द बंदनपै चन्दनपै चन्दपै मलिन्द दरसो परैं। केकी केलकेसर करंज केतकी पै कंज कारकूल कोकिल कदम्ब परसोपरैं। रंगरंग रागनपै संगही परागन पै वृन्दावन बागन बसन्त बरसोपरैं ३६ सुमन समुद्रहू ते शीशमोर फन्दहूते चारुमुख चन्दते अनन्द दरसो परैं। पीतपट बसनहूते कुंदसे दसनहू ते मन्द बिहसन हूते रससरसोपरैं। मन्द रबितानहूते बंशीसुर गानहूतें मैनपैन बानते पराग परसो परैं। भूषण बिशालहूते लाल गुंजमालहूते पीर बनमालते बसन्त बरसोपरैं ३७ पीरीतन सारीशीशपरते उतारिडारी जबते बसन्तऋतु आगम जनाईहै। पीरेपीरे भूषण करनलागे पीर तन बिना पीव प्यारे पियराई उरछाई है। ऋतु पियराई सभा इंद्र मन भाई सखि हमैं पियराई दुखदाई होन आईहै। जोई पियराई तनहूक होत मेरी आली सोई

सौति मालिन पियर फूल लाई है ३८ आयो है बसंत बौरे बागन बसीहै धूम बेलि पगपुंज अरु पीरो दरशानहैं। गुंजिरहे भौंर ठौर ठौर फूले फूलनमें फवत समीरमें सुगन्ध सरसानहैं। नन्दराम देखौतो पपीहरा पुकारतहै पीउपीउ प्यारीके पियूष अधरानहैं। कैसे लाल चलिबे कि चरचा चलावतहै। ऐसे समै ऐसे बैन बानके समानहैं ३९ लोकन सवाँरो तौ सवाँरो ना बिगारोकछु लोकन सवाँरि नरनारिनसवाँरतो। कीन्हो नरनारि तौन प्रेमको प्रचारदेतो प्रेमको प्रचारो तौन सैनको प्रचारतो। सैनको प्रचारो तो प्रचारोनासँयोग देतो कीन्हो जो सँयोग तो बियोगना बिचारतो। नंदराम कीन्हो जो बियोग बिधना तो भूलि बौरेबन बागन बसन्तना बगारतो ४० आसनमें आसन अकाशमें अवासनमें आलिनमें आलिनकि आलिनमें दौरिगो। कहैं नन्दराम त्यों बिहंगनमें बागनमें वनमें बिनोदनमें बौरनमेंबौरिगो। क्षितिमें छबीलनमें क्षपामें क्षपाकर में छत्तिनमें छातिनमें छैकि छलछोरिगो। देखुरीबसंत में बतावतहै कन्त में नसारी सरसन्त में अँगारन बिथोरिगो ४१ फेरि वैसे कुंजनमें गुंजरन लागेभौंर फेरि वैसे कोलिया कुबोलनररैलगी। फेरिवैसे पातनपै पूरिगो परागपीत फेरित्यों पलाशनमें आगिसी बरैलगी। फेरि वैसे पपिहा पुकारैं लगैं नन्दराम फेरि वैसे धाम धाम सौरभ भरैलगी। फेरिवैसे उधमी बसन्त विशवासी आयो फेरि वैसे डारन में डाकसी परैलगी ४२

आयो री बसंत कूकि कोलिया पुकारै लगीं हमसी गरीबिनी को गात गारि डारैंगी। मन्द मन्द मारुत सुगन्ध सरसान लगीं ज्वाल को जगाइकै जरूर जारि डारैंगी। नंदराम बागन में फूलैलगीं बेली बन करिकै अधीरिनी सुधीर टारि डारैंगी। येरीतआवीर तौदेखादे मोहिं मोहन को आखिर कदम्बन की डारैं मारि डारैंगी ४३ ज़ालिम ज़ुलुम दार ज़ाहिर जहान जौन डगर डगर बिथ बगर बगारिगो। कहैं नन्दराम ब्रजगाम कोगरीबिनिन रावरे को चेरिन पै बेरिनको मारिगो। ऊधोजी हवालकहिदीजो नंदलालजूसों गोकुलकीगैल गैल गजबगुज़ारिगो। फूलैंनापलाशये पलाशकै बसंत बाजकाढ़िकै करेजा डारडारनपै डारिगो ४४॥ सवैया॥ लागे अनारन पांडर डारन देखत देव महा डर साचैं। मानुरी झौरन अम्बके बौरन भौंरनके गन मन्त्रसोंबांचैं। लागिउठैं बिरहागिनको कचनारन बीच अनारन आंचैं। सांचहु चारबिचार कहैं पिको नाचेबनैंगीबसंत किपांचैं ४५॥ कबित्त॥ देशबिन भूपति दिनेशबिनपंकज फणीशबिनमणिशओर शशिबिन यामिनी। दीपबिनगेह औसुगेह बिन सम्पति औदेह बिन देहघनमेह बिनदामिनी। कबितासुछंदबिन मालती मलिंदबिन सर अरविन्दबिन होतछबि छामिनी। दास भगवंत बिन संत अतिव्याकुल बसंतबिनलतिका सुकंतबिनकामिनी ४६ कूकि उठीं कोकिलान गूंजि उठो भौंर भीर डोलि उठे सौरभ समीर सरसावने। फूलि उठीं लतिकाहू लौंगन

किलोनी लोनी भूलि उठीं डालियां कदम्ब सुख पावने। चहँकि चकोर उठे कीरकरि शोरउठे टेरिउठीं सारिका बिनोद उपजावने। चटकि गुलाबउठे लटकि सरोज पुंज खटकि मराल ऋतुराज सुनि आवने ४७
सवैया ॥ पीयबिदेश गये जबते तबते सखिकेतो उपाय करंती। चांदनी ओरन कोरकरै मणि मन्दिर भाये कथा गुणवन्ती। नीर तड़ागनको निकरायके हैबिन कीरति रूपकिरान्ती। डौंड़ीफिरी ब्रजमें चहुंघा जनि कोई रँगी अब चीर बसन्ती ४८ शोभितहै मणिमन्दिर में बहुधा चित्र शुभ्रतहां दरशंती। शोभसनी पर्यंक पै प्यारी लसै कुच कंचुकी आप धरंती। ताहीसमय परदेश भजै पति आयो लखे बिहँसी गुणवन्ती। व्यंग्य सन्यो तिनबैनठन्यो घनश्याम बन्यो तुमबाग बसंती४९ जोहित तोहिं पठायेंहुती कहतीनहिं आली बड़ीगुणवन्ती। बैन लजीले सोढोलिपरे बँद कंचुकी आननकी दरशान्ती। भाये प्रमेश तिहारी खुलीं अलकैं चहुंघा सुचियां लटकन्ती। आप गंभीर तु हे मतिधीर दियो किन बीर सुचीर बसन्ती ५० रैन कि चैन बितायो कहूं किबिना गुनमाल लसै यहपंती। नींदभरे दरशात दुऔ दुग देखत राजिरही अरुणान्ती। जावक अंजन रेखदियो बिश्वनाथ कहै बैतिया गुणावन्ती। सांची बताओ छपाओनमोसन पायोकहां यहसारी बसंती५१
कबित्त ॥ योगलागे चलन बियोगसों बियोग लागे लोग लागे सेवक संयोग सुख साजते। गन्धलागेसौरभी द्वि-

रेफ होन अंघलागे तरुके प्रबंधलागे फूलनकी छाजते। रौनलागे बिहग सुपौन सान यौनलागे होनलागे नाच राग रंगऊ समाजतें। संतलागे कांपन अनंत काम तन्त लागे अंतलागे सिसिर बसंत लाग आजते ५२ बरन २ तरु फूले उपबन बन सोई चतुरंग संगदल सजियतु है। बंदीजिमि बोलत बिरदबीर कोकिलहै गुंजत मधुप गान गुन गहियतुहै। आवै आसपास पुहुपनकीसुबास सोई सोधेके सुगंधमांझ सनेरहियतुहै। शोभाकोसमाज सेनापति सुखसाज आज आवत बसंत ऋतुराज कहि· यतुहै५३ मलैगिरिमारुतके मिसि बिरहाकुलनि दिशि दिशा व्यालनका विषवगरायोरी। तापर किशोरतैसो पंचम न बलराग कोककी कलान भीनो कोकिलन गायोरी। कोनसुनि मोचैमान लोचैकोन मिलनको सोचैकोन श्यामदेखि नेहसरसायोरी। आमनके भौंर लागे अंकुरन मौरलागे भौंरलागे भ्रमन बसंत अब आ- योरी ५४ अवनिते अंबरते द्रुमनि दिगंबरते अपर अडं बरते सखि सरसोपरै। कोकिलकी कूकनते हियनकी हूकनते अतन भभूकनते तनतरसोपरै। कहत किशोर कंज पुंजनते कुंजनते मंजुअलि गुंजनते देखुदरसो परै। बसनते बासनते सुमनसुवासनते बेहरतेबनते बसंतबरसो परै ५५ कोकिला कलापी कूजें यमुनाके नीरतीरबीर ऋतुराजको समाज दरस्योपरै। भनत किशोर जोरअ- वनि कदंबनिते मंजुमंजरीनते सुगंध सरस्योपरै। काम व्यथामेटनको सुखद समेटनको भेंटनको पीतमको प्राण

तरस्यापर। अवनिते अंबरते द्रुमनिदिगम्बरते बैहरतें बनते बसंत बरस्योपरें ५६ कूलनमें केलिमें कछारनमें कुंजनमें क्यारिन में कलित कलीन किलकंत है। कहै पदमाकर परागनमें पौनहूमें पातनमें पिकन पलाशन पगंतहै। द्वारमें दिशानमें दुनीमें देशदेशनमें देख्यो दीप दीपनमें दीपति दिगंत है। बीथिनमें ब्रजमें नबेलिन में बेलिनमें बननमें बागनमें बगर्योबसंतहै५७ तरुपत झा-रनमें किशलित डारनमें रमित पहारनमें द्युतिमें दिगंत है। त्रिविध समीरनमें यमुनाके तीरनमें उदित अबीरन में झलाझलकंतहै। छायरह्योगुंजनमें अलिपुंज कुञ्ज-नमें गानमें गोपाल ऐसो रूपदरशंतहै। फूलमें दुकूलमें तड़ागनमें बागनमें डगरमें बगरमें बगरो बसंतहै५८देश में दिशानमें लतान द्रुमबेलिनमें कुञ्जनमें कञ्जन में रङ्ग दरसानोहै। पल्लवमें पौनमें परागहूमें किशलयमें कुसुम कलीन अलिगुंज सरसानोहै। हारनमें क्यारनमें फूल कचनारन में झारन पहारनमें मोद सरसानोहै। बिरिक्ष अनन्तनमें लतिकानतन्तन में दशादिशि अन्तन बसन्त बरसानोहै ५९ अवनि अकाश अंबुअनिलअनलआभा औरै भांतिभईजो मनोज महिमन्त की। करजनिमान या दिशान ह्वै गईहै मन्द मति ह्वै गईहै सब ज्ञान जग जंतकी। कहत किशोर जोर जरनकुयोगिनके भोगिन के भावनि वियोगिन के अन्तकी। लहलही उमगते लखि लसिरही तैसी लहलही लैांदन में लहरि बसंत की ६० आयो ऋतुराज फूले सुमन समाजभयो अमल

अकाश बहै पवन हरैंहरैं। लपटे लतानसों तमालनके जालमौरे अमित रसालते बिशाल मनकों हरैं। कहत किशोर किल कोकिला चकोर नहीं गनैं सांझ भोर चारोंओर शोरको करैं। आनँद मगन कैसी लगन लगाये देव मंदिरन कुञ्जकुञ्ज अलिपुञ्ज गुञ्जरैं ६१ मेरे मेरे मौर तरुमञ्जरीन मीठि आली गंध गुणमयी मंद मारुत झकोरेलेत। नवल किशोरी लोनीकंपयुतलतिकान लपटि लपटि रस आनँद अथोरेलेत। गरलकि गाँठसे गठैसे गढे शिरकटे फिरत अमान मानगढ़ हठि छोरेलेत। कामकैसे चारऋतुराजकैसेसहचर चाँचरि करत चंचरीक चितचोरेलेत ६२ मंजुमलयाचलकेपौन के प्रसंगनते लाल लाल पल्लव लतान लहकैलगे। फूलैं लगे कमल गुलाब आबवारेंघन शंकरपरागभू अकाश अहकैलगे। बोलैलगीं कोकिल भनन्त भौंर डोलैलगे चोपसों अमोलै मकरंद चहकैलगे। नेकौना अटक चढ्यो कामको कटक चारु चारोंओर चटक सुगन्ध महकैलगे ६३ गौनहदहोन लागे सुखद सुभौनलागे पौन लागे बिषद बियोगिन के हियरान। सुभग सवारिले सुभोजन लगनलागे जगन मनोजलागे योगिन केजियरान। कहतगुलाब बनफूलनपलाश लागेसकल विलासन को समयो सुनियरान। दिन अधिकान लागे ऋतुपतियान लागे भान लागे तपन सुपान लागे पियरान ६४ मलय गुलाबीहाथ सुमन पियालेआले चटकगुलाब चाखचाखत बिचारोसो। कहै हरिकेश

मोद चारोंओर छायो जोर मधुर अलापैं राग ताल कूकभारोसो। मुनिमन बसन लथोरे नेहबोरे बलि हेरिझकझोरें करें कोरेंपियप्यारोसो। सुरभी कलार कुंज सदन सुछाक्यो बाँको मन्दमन्द आवत मरुतमत वारोसो ६५ बागनमें चारु चटकाहट गुलाबनकितात देततालिया तुलनतुकतन्तकी। गुंजत मलिंदवृन्द तान सी उपजपुंज कलरवगान कोकिलान किलकन्तकी। गोकुल अनेक फूल फूलेहैं रंगेदुकूल झूमैंआमबौरहाव भाव रसवन्तकी। लहरैं तरुन तरु छहरैं सुगन्ध मन्द नाचतनटीसी आवैं बैहरि बसन्तकी ६६ मलयगिरि तरु कोआतेकढीहै चढी मंजु मकरन्द पुंज पानिपआरसी। अलि बियबूडी बलिकहति कहाहै जापैं सौरभ की लहरि भरीहै खरधारसी। कहत किशोर चारों ओर न बियमबेय प्रबल प्रचण्ड पेयि झरपन झारसी। रहत न रोकी बहैचाहति बियोगिनपै बैहरिबसन्तकी तिरीछी तरवारिसी ६७ सुरहीके भार सूधे शबद सुकीरन के मन्दिरन त्यागिकरैं अनत कहूं न गौन। द्विजदेव त्योंहीं मधु भारन अपारन सों देखु झुकि झुमि रहे मोगरेमरुवदौन। खोलि इन नैननि निहारौंतोनिहारौं कहा सुखमा अभूत आयरही प्रति भौन भौन। चाँदनी के भारन देखात उनयो सो चन्द गन्धहीके भारनबहत मन्दमन्दपौन ६८ द्रुमडार पलना बिछौना नवपल्लवके कुसुम झँगूला तेई तन सुखमारी दै। पवन झुलावैं केकीकीर बतरावैं मिलि कोकिल

हिलक झुलरावैं करतारीदै। झरत परागते उताख्यो करैं राईलोन कुन्दकली नायिकालतान पुचकारीदै। मदन महीपजू को बालक बसन्त ताहि प्रातही जगा-वत गुलाब चुटकारीदै ६९ मल्यो उर आनँद अपार मैनसोवतहि पायसुधि सौरभसमीरन मिलनकी। नेह के झकोरन हिलाय उर दीन्हो सखि सुखमा लवङ्ग लतिकान के हिलनकी। स्वपन भयोधौं कैधौं साँचो करतार ईसि समुझत रीति लखि अङ्ग शिथिलनकी। खिलिगयेलोचन हमारेएकवारसुनि आहट गुलाबनके अखिल खिलनकी ७० चहँकि चकोर उठे शोरकरि भौंर उठे बोलि ठौरठौर उठे कोकिल सुहावने। खिलि उठीं एकैबार कलिका अपाराहिलि हिलि उठे मारुत सुगन्ध सरसावने। पलक न लागी अनुरागी इन नैनन पै पलटिगये यौं कबै तरु मन भावने। उमगि अनन्द अँशुवान लौं चहूँघा लगे फूलि फूलि सुमन मलिन्द बरसावने ७१ हौरैहौरैं डोलतीं सुगंधसनी डारनते औरैं औरैं फूलनपै दुगुन फबीहै फाब। चौंथते चकोरनसों भूलेभये भौंरनसों चारोंओर चरपनपै चौगुनी चढ़ीहै आब। द्विज देवकीसों द्युति देखत भुलानो चित्त दश गुनी दीपति सों गहब गुछेगुलाब। सौगुनेसमीरह्वै स-हसगुने तोरभये लाखगुनो चांदनी करोरिगुनो माह-ताब ७२ गुंजरनलागीं भौंरभीरकेलि कुञ्जनमें कैलिया के मुखते कुहकनि कढ़ैलगी। द्विजदेव तैसीकछूगहब गुलाबनते चहँकि चहूँघा चटकाहट बढ़ैलगी। लागेसुर-

सावन मनोज निज ओज रति बिरही सतावन की बतियाँ गढ़ैलगी । होनलागी प्रीति रीति बहुरि नईसी नवनेह उनईसी मतिमोदसों मढ़ैलगी ७३ पाँखुरीलै साजी सेज सेवतीकी बेलिन चमेलिनहू सरसबितान छबिछाईहै । फैल्यो चहूँ ओरन गुलाबनको गंधधूर धुंधुरित सौरभी समीर सुखदाई है । चारौं ओर कोकिल चकोर मोर शोरनसों ओर क्षिति छोरन अनंद अधिकाईहै । आज ऋतुराजके समागमके काजहोत धामधाम बेलिन के आनँद बधाईहै ७४ गुंजरनलागे भौंर ठौर ठौर कुञ्जनमें लाग्यो बेलि पुंजन दवासो कामजुरको । बोलन लगेहैं पिक चातक चकोरमोर बँधिगयो सरस सनाको एक सुरको । काम बनबानिक बिलोकि इहि भाँति दीह दुरिदुरिजात दुख कौनके न उरको । बंद भयो चाहत सुरेशको समाज आज मंदभयो चाहत अनंद सुरपुर को ७५ कुंजलागे लसन प्रसून बिकसन लागे रसन सुगन्ध मकरंद की झरीन के । भौंरन के पुञ्ज मंजु गुञ्जरन लागे बन जालजागे धरन रसाल मञ्जरीन के । छाई छबि शेषर बसन्त की अवाई ब्रज लागो मोद बढ़न बिनोद की भरीनके । रंगलागेचढ़न उमंगऊबढ़नलागे संगलागे कढ़न सुहाये सुंदरीनके ७६ गावनो धमारिको सुलागत सुखद महा धावनो सुमारुत को आनँद अनंत को । चावनो बढ़ावनो भो आलिन को गन गुनि हिय हुलसावनो भो कोकिल भनंतको । मगादेव भनतकलेश को परावनो भो अङ्ग उमगावनो भो देखे पदकन्तको ।

छावनो गुलाल को सुहावनो लगत आली भावनो लगत मोहिं आवनो बसन्त को ७७ बौर मौर किंशुक सुकङ्कन कलित सौर भूषण सुफूलके परागपट भायो है। ठाकुर पताके पत्तालाल कञ्ज सिंहासन कुञ्ज भेद पालकी गयंद रथ छायोहै। पौनहै सुदौर बने बिरिछ बराती तौर भौंर चोपकादि बोल बाजने बनायो है। जोहनसे मोहन बहारबनरीहै संग सोहन बसन्त बँदरा सो बनिआयोहै ७८ पीरोफूल चम्पक को शोभियत कर्नफूल तैसोहि दुकूल अतिसरस सुहायो है। लहँगा है पीरो कुचकंचुकी सुहात पीरी पीरिहीशरीरमानो केसरि लगायो है। मोतिनकीमाल गर सोहै बनमाल पीरी पीरोपोखराज नगजटित जरायोहै। कञ्चन की भूमि तामें धरैं पग झूमिझूमि देखो ब्रजचन्दजू बसन्त बनिआयोहै ७९ नैन अरबिन्द मकरन्द रस भरे सोहैं भूषण बिबिध फूल बन छबिछाईहै। कोकिल बचन बरअधर सुपल्लव से कुन्दकली दन्त द्युतिदीपति सुहाईहै। चम्पक सुमन गात सौरभ हँसत बात फौज भौंर भीर सङ्ग सखी समुदाईहै। प्यारे ब्रजराजजूसों उमगि अनङ्ग प्यारी खेलन बसन्त को बसन्त बनिआईहै८० सरस सुधारी राजमन्दिर में फुलवारी भौंर करैं शोर गान कोकिल बिरावके। सेनापति सुखद समीरहै सुगन्ध मन्द हरत सुरत श्रमशीकर सुभावके। प्यारो अनकूल कहूं करत करनफूल कहूं शीशफूल पांवडेऊ मृदुपावके। चैतमें बिभात साथप्यारी अलसात लाल

जात मुसुकात फूल चुनत गुलाबके ८१ रङ्ग रङ्ग फूली बेलि बिटप अनेक सङ्ग देवकी नँदन कहै शोभायों अनन्तकी । त्रिविध समीर डोलैं बोलैं पिक प्यारे बोल पुञ्ज अलि गुञ्ज गति मोहै मैन मन्तकी । सखिन स-मेत साजे जेवर जराऊ सबै बसन बसन्ती शोभा भारी प्यारी कन्तकी । वेशबङ्गलामें वेश सुनत बसन्त राग बागवन बनक बिलोकत बसन्तकी ८२ बिथहि बगा-स्योघहै बात मलयाचलकी गिली उगिलीहै बरब्याल-न के जालकी । बाड़वको सङ्गी बिधुभयो है कुढङ्गी याते क्यों न करै चहुंओर चांदनी ज्वाल की । कहै शिवकवि फूले कुटिल पलाशकूर जानै कहा बात काहू दीन प्रतिपालकी । प्यारी बिन देखिये बसन्त में अ-चम्भो सक शालतहिये है मृदु मञ्जरी रसालकी ८३ फूलैंगे अनार कचनार नहसुतआम फूलैंगे सिरिस औ पनसफल शूलैंगो । फूलैंगी सुपांडर औ मालती अमि-लतास सेमर पलाश फूलि आगिरूप तूलैगो । फूलैंगे कनेर माधवी चमेली रघुनाथ फूलैंगे गुलाब जिन्हैं देखि चेत भूलैगो । बिरहको बिरवालगायो जौनकन्त सखी आवत बसन्त कहो वहो अब फूलैगो ८४ भूले भूले भौंरभाँवरैं भरैंगे चहूं फूलि फूलि किंशुकजकैसे रहिजायहैं । द्विजदेवकी सों वह कूजनि बिसारि कूर कोकिल कलङ्की ठौरठौर पछिताय हैं । आवत बसन्त के न ऐहैं जोपै श्याम तोपै बावरी बलाय सों हमारेहू उपायहैं । पीहैं पहिलेहीते हलाहल मँगाय या कला-

निधिकी एकोकला चलन न पायहैं ८५ बिकसी बसन्तिका सुगन्ध भरी शिवकवि औरैढङ्ग भये बन कुञ्ज की अलीनके। कोकिल के कल कल कल नहिं देत पल चारोंओरशोर सखि सुनिये अलीनके। ऐसीसमै मानप्रानपतिसों न कीजियेरी मेटिबेको मान मानजीकी अवलीनके। देखो रतिराज काज ऋतुराज कारीगर गुरूजबनाये हैं गुलाब की कलीन के ८६ कोकिलन खोजिन को सङ्गलै अनेकफिरैं चारोंओर प्यारी बिरही जनके खोजको। यातेहैं। कहति चलुप्यारे सुखदानपास तजिकै अयान दूरकैरीमान सौजको। मणिदेव भनत रसालन के बौरनके भौंरन ये सोहत धरे हैं महाओज को। दायक बयथारी ऋतुनायक लिये हैं बर घायक परमदीवे शायक मनोजको ८७ बोलैं लगीं कोयलैं औ कोकिला कलोलैंलगीं डोलि डोलि सुखद समीर लागयो परसैं। फूले द्रुम पुञ्जन पैं गुञ्जन मधुपलागे मंजुफूल वृन्दलागे मकरन्द बरसैं। शेखर धमारिन की धूमसी मचन लागी मैन लागयो नचन नवेली नेहसरसैं। कन्त बिन कैसे अन्तधीरज धरैंगी आली मानगढ़ अन्तक बसन्तलागोदरसै ८८ तारे जहाँ सुभट नगारे पिकनादतहाँ पैदलचकोर कोरबांधे बंद बेशकी। गुञ्जरत भौंर पुञ्ज कुञ्जरत मोर जहाँ पौन झकझोर घोर धमक हमेशकी। भनत कवीन्द्रसरफौज़ है बसन्तआली मिलेतन्त कन्तसो मनोजमान बेशकी। मानवारीगढ़ी पै गुमानढाइबेको बढ़ी चढ़ीहै सवारी

या निशाकर नरेशकी ८९ मदमतवारे भारे भौंरगज गुञ्जरत मुनिजन देखि गीतगावत उमाहके। कोकिल नकीब बोल करत कलोल आगे पौनहरकारे आली छूटे चित्तचाहके। मोहन सुकविजीति शिशिरतगीर कीन्हे बशकरि लीन्हे देशरहेना निबाहके। यहजिय जान मान करना गुमान आली डेरापरे बागन बसन्त बादशाहके ९० बोलि कै मलिन्दवृन्द करखा सुनावैं शोर दुन्दुभी धुकार बोलैं कोकिला अगाहके। बन्दीजन बिरद पपीहा बोलैं बार बार खोलैं खुशबोई तरु सुमन अबाहके। चटकैं गुलाब चहूंओर ते चटाचटकै मानो जंगजीति बाढ़िदागत सिपाहके। परीहै पुकार बिरहीनिन के द्वारद्वार डेरेपरे बागन बसन्त बादशाह के ९१ शोरसहकार शीशबौरनके तौरकरे मोरन की बागी बेशबाजे रतिनाह की। परिभृत बन्दीजन बेहद बिरदबोलैं झंझापौन ढाढ़ीलखि बाढ़ीपीर दाहकी। कहै प्रहलाद कवि किंशुक त्रिशूल फूल शूलउपजावैं कहागति है निबाहकी। बिरही बचैंगेकैसे चाहकरि अन्तहेत चढ़ी फौज प्रबल बसन्त बादशाहकी ९२ कूकि कूकि कोकिल कठिन आंच फूंकैलगे दरपभभकैलगे दमकन दाहके। डोलि डोलि त्रिबिध समीर बीर तीखे तीर भोरैलगे साहस सिखाये नेह नाहके। कविसरदार लागे काढ़न बिसासी बौर तौर लागे चढ़न चहूंघा चितचाहके। रोज रोज बढ़न सरोजन के शोशभौंर ओजलागे पढ़न मनोज बादशाहके ९३

आयो ऋतुराज महाराज महिमण्डलमें तेहिकी दपट आगे शिशिर हिमन्त को। दुन्दुभी धुकार डफतालहू को भुनकार मेरे जान घंटाहै मदन मय मन्तको। कवि हरिजन कहै प्यारी परबीन सुनो याको तौ बचाव है मिलन एक कन्त को। पूरण प्रताप दिन प्रभुता बढ़त आवै कोकिला पढ़त आवै बिरद बसन्तको ९४ बल्लीको बितान मल्लीदल को बिछौना मञ्जु महलनि-कुञ्जहै प्रमोद बन राजको। भारीदरबार भयो भौंरन को भीर बैठ्यो मदन दिवान इतमास कामकाज को। पण्डित प्रवीण तजि माननी असानगढ़ हाजिर हुजूर सुनिकोकिल अवाजको। चोपदार चातक बिरदबढ़ि बोलैं दर दौलत दराज महराज ऋतुराजको ९५ लसत कुरञ्जबन चम्पक पलाश बन फूलीं सबशाखा जेहरत्ति जनचित्तहैं। श्वेत पीतलाल फूल जालहैं विशाल तहां आछे अलि अछर जे काजरके सित्तहैं। सेनापति माधव महीना भरि नेमकरि बैठे द्विज कोकिल करत घोषनित्तहैं। कागदरँगीनमें प्रवीनहै बसन्तलिखेमानो कामचक्कवै के बिक्रम कबित्त हैं ९६ फूल फरमान छाप छपद दुहाई बास नूतन राजसाज रेणु तम्बूदै पशेरीहै। केकी कारकून पिकबानी चिठिआई जमा बिरह बढ़ाई छबि रैयत मरोरी है। शीतल बयारि बाद सापिरूप लीनोहेरी उपज हमारे हरि ध्यान जो घरोरीहै। आयोहै बसन्त व्रजलायो है लिखाय शोय जोन्हको जलेबदार कामको करोरीहै ९७ बैठ्यो बन

बीथिन बनाय दरबार नवपल्लव गिलिम औ गुलाबन की गद्दीहै। कीन्हे कीर कोकिल नवीन नवसिंदापात झारिदैमिसिल दफतर कुलरहीहै। बिरह पुरापै निज अमल लिखाय लायो हरे हरे चातुरी सों चाँपत चौहद्दीहै। कीन्हे सतलन्त निज सन्त औ असन्तन पै काम क्षितिकन्तको बसन्त मुतसद्दी है ९८ माघसुदी पञ्चमी के द्योस जे अबालखेलैं लाल भये धारिकै गुलाल बरबेशको। कहैंकमनीयकबि जोहिकै जुगुति ऐसी मशादेव बिमल बिलोकि बुधिदेश को। आगि मैं अधम भुंजैं तिनकोतेहायभनि कीबेफिरियाद महा पायकै कलेशको। प्रबल पलाशगनै अमित असन्त जानि खोजि रहे बिरही बसन्त बसुधेशको ९९ बौरैंगे रसाल बनबागन बिशाल सुनि कोयल कुहूकि दिन रैनि क्यों अतीतैंगो। ह्वै हैं जो प्रफुल्ल मल्ली मालती मतल्ली बल्ली अवली अलीन काकलीन कल गीतैंगो। पण्डित प्रवीण बिनपीतमबहैगो पौन कौन रतिरङ्गमें अनङ्ग जङ्गजीतैंगो। बीतिगयो कैस्यो करि शिशिर हेमन्त आली कन्त बिनकैसे या बसन्तऋतु बीतैंगो१००घन नव बीथिन ते घर घर घेरिरहे लाल पीरे लागत न जानि परैं कारेसे। गावत समाज करे आवत न बाज राजकरो ये निलज छकेछाकसतवारेसे। गोकुल बसन्तमें बियोगिनके जारिबेको होरीसी हिये में हरषित निरधारेसे। भीजे मकरन्द सो पराग लपटाने देखो मधुकरडोलत फिरत फगुहारेसे १ मधुकर

माल बनवेलिन के जाल पर कोकिल रसाल पर कुहुक अमन्द की। मन्द पौन शीतल सुबास भई बागन विलास मई कालिदास रास मकरन्दकी। देखिये सयान बैशाख में पयान करें कान्ह को दयान होत गोपिनकेवृन्दकी। कैसे देखिजीहैं चढ़िचाँदनी महल पर सुधाकीचहल बसुधाकी चारु चन्दकी २ आवति चली है यह विषम बयारि देखु दबे दबे पायँन किवाँरनिलरजिदे। कौलिथा कलंकिनिको दैरी समुझाय मधुमासी मधुपालिन कुचालिन तरजि दे। आज ब्रजरानी के बियोग को दिवस ताते हरे हरे कीर बकवादिनहरजिदे। पीपी के पुकारिबे को खोलेंज्यों नजीहन पपीहनके जूहन त्यों बावरी बरजिदे ३ फूल लाई फललाई नीके नीके दललाई बौरलाई बनितासु आइधन गावैना। हरलाल दोऊ करजोर कहीं तोसे बीर पीर औरहूकी जानि हियो तरसावैना। नेहसरसावैत न रंगबरसावैं मोसों पंचशर पावककी चाँचर मचावैना॥ चोवाचारुचन्दन अतरदरशावैं जनि कंत बिनमालिनि बसन्त मोहिं भावैना ४ घसोघसो चंदन उसीरसीर नीरे धरो नीरलावो शीतल समीरलागैगरमैं। घोरो घनसाररी गुलाबजल धारन सों लावोदल नीके नलनीके नये नरमैं। देउरी किवाँरैं कोऊ निकरो न द्वारैं सुनो आवत बसंतयों पुकारैं घर घर में। भूलसी गईहैं सुधि देखिफूली धूरिधारा हूलसोमचीहै बिरहीन के नगर मैं ५ मलय समीर पौरकारिले अ-

धीरमोहिं नेसुक सुसीरनीरधीर न उधारिले। कहैहरि-
केशचन्दभ्कारिले घरीकतहूं साँचो वियकंद चारुचाँ-
दनी पसारिले। अबहीं मिलत मोहिं नन्द के दुलारे
प्यारे तौलौं तू उतार कारीकोकिलकहारिले। गारि
ले गरब गरबोले तू अनंगकिन मेरे इनअंगन अनंगबान
भ्कारिले ६ साँझहोसों वरपरदान देहौं दुरिरही एक
त्रियशंकाया कलानिधि कसाईकी। कन्तकीकहानी
सुनि श्रवणा सिहानीरैनि रंचकबिहानी यावसन्तअंत
घाईकी। कलकोननेको आली पलकोलगनपाई हरि
कितगई नींद नैननमें आईकी। कुहूंकह्यो कोयल कु-
मतिमेंउघारेहग जागिके जो देखौंज्वालजरत जुन्हाई
की ७ प्यारे के वियोग आली उठी आगि वृन्दावन
जरतींसहेट कुंजें सुन्दरी महाँमहाँ। बौरे कचनारआँ-
चउठति पलाशनते कुसुमकरील डीठिपरत जहाँजहाँ।
मंशाराम तिन्हैं भेंटि आवत समीर बीर तयोजात तन
तालीलागति तहाँतहाँ। मृग अधमारे बिललातहैं भँ-
वरकारे कोयलहु कोपलैं पुकारती कहाँकहाँ ८ आव
दुरकाय दे गुलाब खस केवड़ाको चन्दन चमेलीबेली
माधवी निवारीमें। जुहीसोनजुही जाहि चम्पक कद-
म्बसल्ली सेवती समेत एला मालती निकारीमें। रघु-
नाथ इनको बिलोकिबो न भावै हमैं कन्त बिन आयो
है बसन्त फूलवारी में। भागिचलो भीतर अनार कच-
नारनते आगि उठी आवति गुलालाकी कियारीमें ९
कुञ्जकुञ्ज प्रतिगुञ्जरत देखुअलि पुंज कूकैं कूर कैलिया

कहाँलौं धीर धरिबो। त्रिविध समीर आनि तीरसो लगतहिये उमगै गँभीरपीर कैसे दिन भरिबो। कहै शिव कबिहाय प्रगट्यो बसंतसमै बिनबनमाली आली भोजरूरमरिबो। सेमर अपारन में किंशुक की डारन में भयो कचनारन अँगारन को फरिबो १० पातबिन कीन्हे ऐसी भांतिगनबेलिनके परत न चीन्हे जे वे लरजत लुञ्जहैं। कहैपदमाकर बिसासी या बसन्तके सु ऐसे उतपात गात गोपिन के भुञ्जहैं। ऊधो यह सूधो सों सँदेशो कहिदीजो भले हरिसों हमारे ह्यां न फूले बन कुञ्जहैं। किंशुक गुलाब कचनार औ अनारनकी डारन पै डोलत अँगारनके पुञ्जहैं ११ मंजु मल्लिकान के मधुर मकरन्द हेत रिन्द ये मलिन्द जित तित ते पिलैलगे। जोहिजोहि चांदनी मनाये बिन मोहि मोहि मानिनी समूह प्राणपतिन मिलैलगे। कहै शिवकवि क्यों बसन्त बिनकन्त बीतै त्रिविध समीर डोलिदाहन दिलैलगे। किंशुक के जाललाल लाल बन बीथिनमें फूलन के मिस आली आगि उगिलैलगे १२ लाललाल केशूफूलिरहे हैं विशालसंग श्यामरङ्ग भेटूमानो ससि में मिलायेहैं। तहाँ मधुकाज आय बैठे मधुकर पुञ्ज मलय पवन उपबन बनधायेहैं। सेनापति माधव महीना में पलाशतरु देखि देखि भाव कबिताके मन आयेहैं। आधे अन सुलगि सुलगि रहे आधे मानो बिरही दहन कामकैलापरचायेहैं १३ कन्त बिनबासर बसन्त लागे अन्तकसे तीर ऐसे त्रिविध समीर लागे लहकन। सा-

नखरे माँग से चँदन घनसार लागे खेदलागे खरे मृग मेदलागे महकन। फाँसीसे फुलेललागे गांसी से गुलाब अरुगाजअरगजा लागे चोवालागे चहकन। अंग अंग आगि ऐसे केसरिके नीरलागे चीरलागे वरन अबीर लागे दहकन १४ वेईदल फूलजिन्हैं बाढ़त बिलोकिफूल शूल समते भये समूल छबि सारीसो। सेवक बखानै तेई ठौर ठौर भौरतहैं भौंरन के तौर और ह्वै गये महारीसो। शीतल समीर सोईपीरको करतहाय धाय धाय परत पराग रागधारी सो। जायन कहन्त कोई कोजै कौन तन्तराम कन्त बिन ह्वै गयो बसन्त अन्त-कारीसो १५ किंशुक समान के निशान फहरानलागे बन्दीजन भीर भारी भौंरहू गलाकरैं। पञ्चशर साथ हाथ लीन्हे है नवीनशर शीतल सुगन्ध मन्द मारुत चलाकरैं। बगरि उठे हैंरी बिलोकि बैरी चहूं ओर हूहें करिधावैं भटकूहै केािकलाकरैं। हाय बिन कन्त को सहाय करै मेरी अब आवत बसन्त बिरहीन पै हलाकरैं १६ बिटप लताकढ़ी हैं चाप दापसी बढ़ीहै सेसर चढ़ीहै अली अवली सुधारिकै। सुमनसुमन जाने वेई शरसैंचिताने सहा बिषसाने जेपराग रहेभरिकै। अहट बिचार्यो चटकाहट कलीनपार्यो मार्यो यह चाहत मोत्रारक अकरिकै। जैहौं जरि मैन आजु जौ-हरकै तोहींपर पावक शिखा पलाश पल्लव पकरिकै १७ फूलनलसन्त एतो अनल अनन्तराजैं बाढ़्यो काम तन्त सो बसन्त की वहारमें। धूंधुर परागन धुवांकी

धुधुकार हेरि हारनमेंहै नहीं अगारन अगारमें । दहर दहर बन देखिकै कहरत्यागि लागियापहर दुखसागर के पारमें । साशन सों मैन के बिनाशन को देह करु आशन को सेवक पलाशनकी डारमें १८ हारन में फूलको बिदारन बिदारनते धारन कस्यो न दुख धारन को पारपै । कोलिया कि कूकनि अचूकनि शरण खाय टूकन भयो पै गयो हूकन की ढारपै । सालकरि सालन रसालन के सालनकी कीन्हो मौर मालन उतालन सुतारपै । साशन सों मैन के बिनाशन को देहकरु आशन को सेवक पलाशनकी डारपै १९ मदनमहीपको समन्त बलवन्तदिशा बिदिशानि बीराले बसन्त उठिधायेहैं । करतनवारन अवारन प्रताप जाको शङ्कर बखानैयोंअजब गुनगायेहैं । फिरत दोहाई भौंर भौंरन के व्याजकूर ललकारैं कोकिलकी कूकनि गनाये हैं । फूले ये पलाश केन फूल काढ़ि काढ़ि मानो नेजेमें बियोगी के करेजे लटकाये हैं २० ज्वैरहे सुजान तिन्हें जात परदेश कोन ह्वैरहे ते भौंर सिसकीरति बिहीनके । फूल सिससानो डार पानिपर पेखिरहे आनँद अतूलहोय सोभउमहीनके। कहैसगुणदेवखरे देखिकै पलाशनको जानिकै भलाशन बिलोकि बलहीन के । बाढ़िकै सुतेजवान बधिक बसन्त बली मानो दीन काढ़िकै करेजे बिरहीनके २१ ठौर ठौर चाँचर चुहुलमची चंगनकी अंगनकी और दशा औरैरूप छायोहै। आनँद उरन अति असित अखराड

छायो नागर मिलन दिन दाव दरशायोहै। लाज औ रुखाई तिय सङ्ग लै विवेकपति भाज्यो ब्रजमैंते मार बाननदबायोहै। प्रौढ़ी प्रीत जागन नवल नेह लागन को फागन सनेहिन के भागन ते आयोहै २२ आई बरसानेते अकेली कोऊ यशुदा पै ग्वालन भिजोइ डारी खेलबीज ब्वैगयो। सुनपुर भानते दुलारी चली कीरतिकी धूम मचपरी भारी गारी घोय च्वैगयो। नागरि चमकिरही चपलासी चहुंओर घेरे घनश्याम शब्द होहालोक ह्वै गयो। घरुलाल तरुलाल केकी शुकपिकलाल घुमड़्यो गुलाल ब्रजलालमयी ह्वैगयो २३ लोल वियलोचन अलोल झलकत छवि छलकत द्युति मणि किरिणा कपोलमें। दीपति ललाटतेछुटत बिघटत पट नटत किशोर भृकुटी तट कलोलमें। आज-नंदलालसों सुनवलकिशोरीहोरी खेलतलसत बिहँसत बरबोलमें। रंग झर झेलत पछेलत अलीनमुख मीड़त गुलाल मिलिजात फिरि गोलमें २४ अँचराउरोजनते खुलिखुलि जात प्यारी फेंके पिचकारी भारी लागी रंगबरसात। कहतबनै न कछु देखतही आवैबनि सैन कामिनीसी दामिनीसी द्युति दरसात। कुच उचको-हैं लचको हैं मध्य देश बेश बेणी कवि आनन अनूप छविसरसात। छायजात आनँद लजायजात गोरीसुनि चोटकरि कान्ह पै अलीकी ओट आइजात २५ खेलि-बे को फाग देवदारासी उतरिआई दीरघ दृगन देखि लगत न पलकें। उरते दुकूल दरशात भुज मूलबरउन्नत

उरोज हारहीरन के झलकैं। बेणी कबि भूपर धरत मन्द मन्द पावँ आननके ऊपर अनूप छबि छलकैं। लाललाल रंगभरी मदन तरंग भरी बालभरी आनँद गुलाल भरी अलकैं २६ नन्द के कुमारकी अपार पिचकारिनकी धीरन पै धारते सँभारन सँभारिगई। गाय गाय धाय कै धमारि यों मचाई धूम ताहु धीर बारिन सों धीरताव धारिगई। महादेव भनत गवाँरी कहि गारीदैके ग्वालिनिको काल्हि जो गुमानै निज गारिगई। बीर की सों बीर बलबीर पै अबीर सोई भीरमें अभीर की अभीरि आजु मारिगई २७ होरी आजचोरी की कहोरी कहा मोरीदई लाडिली पठाई भुजगहन सहेलीको। भोरे भाय भावतो गहाय गयो जानि बूझि आयगयो संग में मचाय रंग रेलीको। ललिता लचायोलंक बाहँ दे बिशाखा गरे डारि हिय हार हरि आनँद चमेलीको। प्यारी लै गुलाल नन्द-लालमुख मीडै ज्योंलींतौलौं छैलछ्वैगयो कपोलअल-बेली को २८ होरी के दिवस कहूं गोरी राधिका को देखिकान्ह जियमांझ योंबिचार्‌यो बुद्धिबीछेते। आजु बिनरँगे केहूं छाडिहौं न लाडिलीको घातनमें लाग्यो फिरै आनँद के ईछेते। कहै चिरजीवी त्योंहीं लाल पिचकारी लैके लपक्यो प्रिया पै प्रिया भागी तकि तीछेते। ओढ़नी सरकि चोटी पीठयों लखात मानो इन्दु भाज्योजात औ फणिन्द पर्‌यो पीछेते २९ मचि रही फाग और सबसबही पै घालैं रंग औ गुलाललाल

ख्याल अवलोकों मैं। मोपै तुही ठाकुर लगाये घात घूमैघेरि देखौं अब जात कितै इतउत रोकों मैं। गहि लेहैां गाफिलकै सखा मैं छबीले छैल छेदिकै छलीजू निज नैनन की नोकोंमैं। ओटैं ह्वै करत पिचकारिन की चोटैं कहा सैांहैं आव साँवरे सराहैां तब तोकों मैं
३० बावरे न होउ सुनौ साँवरे बिहारी तुम क्षणमाहिं रावरे गरूर को निकारैंगी। राधामहरानी जब ऐहै उमगानी तब रावरी सुबानी वर बचन बिसारैंगी। सगादेव भनत बखानकी चलाँकी तासु रावरे सखान की न भीरकोबिचारैंगी। खरेहो गुलालके किलाल मैं तयारपर देखतही लाल तुम्हैं लालकरिडारैंगी ३१
धूंधरि उमंग सों मचायहैां अबीरनकी संगलिये मदन तरंग भरी गोरीमैं। रस बरसाय दरसाय हाय भाय तिन्हैं गाफिल करैां तो वृषभान की किशोरी मैं। सहिकै अपार पिचकारिन की धारसोहैं गरक करोंगी हनुमान रंग रोरीमैं। खेलन को होरी चहै मोते अरु भोरीपर ओरी आज छैल को गहोंगी बरजोरी
मैं ३२ लालकी ललकि लखि दौरि दुरिजातहुती छुवन न देत छबितन द्युतिजालकी। जालकी दरीचोते निहारि दुरिजातिहुती भांतिहुती मन्दिरमें द्युति सों मसालकी। सालकीन सुधिताका आजु सगादेव कहै ह्वै गई बसनवारी मदन महाल की। हालकी सुनोरी चितचोरी करिदौरी वृषभान की किशोरी भोरी भरिकै गुलालकी३३ डरोना अहीरनते अगर अबीर-

नते चारिजनी चारु चारओरनते धावोरी। एकहाथ आडोपिचकारीको अगारी मार एकहाथ ओट राखि आंखिन बचाओरी। कवि सरदार आयो बड़ खिल-वारीताहि खि तको सवाद रंगरंगन बताओरी। कीर-तिकुमारी कह्यो हेरिके कुमारी कोउ हैारी गुनवारी बनवारी बांधि लाओरी ३४ सुनत निदेश सो अशेश बनितासुभेश चली एकएकगहेगरबअकरिके। कबरी समेटिबांधीसबरी सुभगशुचि लहंगो जबरकस्यो लंक में जकरिके। गिरिधरदास हाथ फूलकी छरीलैधाई छबिसों अतूल होरी होरी शोर करिकै। चपला सी चमकि चहूंघासों चपलचारु चंदमुखी लीन्हों ब्रजचं-दको पकरिकै ३५ आज ब्रजराज ब्रजबधुन समाज सङ्ग लाजतजि खेलैंफागु गोकुल नगरमें। उड़त गुलाल क्षिति अंबर भयोहैलाल छिरकैं गुलाल छूटैं पिचकैं डगरमें। गहीआय अचकै अकेली हरिहाथवीर गोपी भाजि दुरीभौन भीतर बगरमें। अतर अंबीर तर बतर शरीर कीन्हे सतर उरोजभीने चन्दन अगरमें ३६ रंग भरी कंचुकी उरोजनपै तांगीकसी लागीभली भाईसी भुजान कखियनमें। कहै पदमाकर जवाहिरसे अंग अंग ईंगुरसे रंगकी तरंग नखियनमें। फागकी उमंग अनुरागकी तरंगवैसी तैसी छबि प्यारीकी बिलोकी सखियनमें। केसरिकपोलनमें मुखमैं तमोलभरी भाल में गुलाल नन्दलाल अंखियन में ३७ एकै संग हाल नन्दलाल औ गुलाल दोऊ दृगन गये जो भरि आनँद

मढ़ैनहीं । खोयखोयहारी पदमाकर तिहारीसौंह अब तो उपाय एको चित्त में चढ़ै नहीं । कहा करौं कहां जाउँ कासोंकहौं कौनसुनै कोऊतो निकारो तातेदरद बढ़ै नहीं । एरी मेरी बीरजैसे तैसे इन आंखिनते कढ़िगो अबीरपै अहीरको कढ़ै नहीं ३८ खेलोमिलिहोरी घोरो केसरि कमोरी फेंकोभरिभरि झोरी लाजजिय में बिचारौना । डारौ बहुरंग संग चंगऊ बजावो गावो सबहिरिझावो सरसावोशंकधारौना । जोरिकरकहति निहोरि हरिचन्द प्यारे मेरी बिनती है एक ताहि तुम टारौना । नैनहैं चकोर मुखचन्द सों परैंगी ओट याते इन आंखिन गुलाल लाल डारौना३९ आईफाग खेलिकै सकेलि सुख सांवरेसों सुन्दरि सुघर सोसनेह सरसावैहै । केसरिके रंगभीनी चूनरीसुरङ्गरङ्ग अङ्गन अनंगकी तरंग दरशावैहै । राजत अनोखो आधोवदन गुलाल मढ्यो कहत किशोरसो अनूप छबि छावैहै । असल अभंग अछो उलसह मानो मानो अरुण घटाते शशि निकसत आवैहै ४० आईखेलिहोरी कहूंनवल किशोरी भोरी बोरीगई रंगन सुगन्धन झकोरैहै । कहै पदमाकर एकंत चलि चौकीचढ़ि हारनके बारनके बन्द फन्द छोरैहै । घांघरेकी घूमनिको उरुन दुबीचैं पारि आंगीहू उतारि सुकुमारि मुख मोरैं है । दन्तन अधर दाबि दंदरिभईसी चाप चौवर पचौवरकैचूनरि निचोरैं है ४१ बाग के बगर अनुराग भरी खेलि फाग आई अलबेली मन मोहनी गोपाल की । कालिदास

ललितललोहीं छवि छलकति नथमुकतानकी कपोलन कि भालकी। राजकरो इन्दु अरविन्दसों नकाजआज देखिबे को शोभा याके बदन रसालकी। बरुनी पलक पर भृकुटी तिलकपर घूसरी अलकपर झलक गुलाल की ४३ फागु खेलि श्याम संग सदन सिधारी प्यारी राजैद्युति दामिनीसी भामिनी भरी अनंग। कबिराव राना बैठि रतन सिंहासन पै दर्पभरो दर्पनलै भूषन सं-भारै अङ्ग। चंदमुख चन्दन ते चन्दकी कलासी खासी कंचनकी झारिनमें जलभरि लाईगंग। कोमल कपो-लनते धोवती गुलाललाली त्योंत्यों होतिआली अति गहन गुलाबीरंग ४४ सांझहीते खेलत रसिक रसभरी फाग भर्यो अनुराग रागगावैं रीझिपगिपगि। केसरि गुलाल सोलबढिरह्यो रघुनाथ रूप की ठगोरी डारि गोरीडारी ठगिठगि। भोंडरके किनकायों लाल के बदनपर निरखि जुन्हाई बीच ऐसे लसैं जगिजगि। सोनेफूल्यो वारिज विलोकि कलानिधि आली कि-रनों चलाय से लुनायरहीं लगिलगि ४५ छाई छबि हीरनकी रविज्योति जीरनकी सुखमा गंभीरन की चितकारी अलकैं। अबला अहीरनकी पोयी दधि क्षीरनकी सोनेसे शरीरनकी गारीदेत बलकैं। पिच-कारी नीरनकी सारैं समतीरनकी देहुदान चीरन की माँगिबेको ललकैं। सोहैं करिबीरनकी उडन अबीरन कीलाली मुख बीरनकी बीरनकी झलकैं ४६ मारकी मरोर बेशुमारसों फिरैंनसहैं मारकुंकुमानकी उरोजन

पै गोरीरी। लालरंग ह्वैगयो किलाल कालिन्दी को सबडारैं बहुलाल पै गुलालनकी झोरी री। मणिदेव भनत करोरैं करि भावबाल घोरैं रंग दौरैं चहुं ओरैं रंग बोरी री। आनँद समाजकी है जामैं सुधि लाज कौन आजकी अनूप ब्रजराजकी सुहोरी री ४७ खेलतहैं होरी हरिराधे आजवृन्दावन ऐसीजुरी भीरअंग अंगसोंछिलतहै। लालको मयंकमुख मंगलसो दरशात जबवाके करके गुलालसों मिलतहै। घूंघुटउघारत करत बारबार चोट बालमुख श्याम चौर ऐसे सकिलत है। मानो प्रभुआगे राहु बैर निज लेनकाज चंदगुनहीं को लै गिलत उगिलतहै ४८ मोतीकल गङ्गनीलसारी कालिंदीको संग उरयोलालरंग रूपभारतीको भरिगो। सेवक भनतके हिये को अनुराग जागि उमँगि अदाग आज ऊपर उघरिगो। ललकिललाने मूठि बादलाकी मारी तापै सनखउरोज पर ऐसो अनुसरिगो। मानो भानु पूरकला आपनीको गूरमानि ह्वैके चन्दचूरचंद चूरपै बगरिगो ४९ किरराासि कढ़िआई अंगना उघारेगात कबिपजनेस छैलक्षितिपै छहरिगो। उझकि झपाक मुख फेरि प्यारेरुख ओर हेरि हरि हरषहि मंचलपै अरिगो। आधेमुख मलतअबीरते सुकेससाथ नखरेख चिह्नित उरोजन पै झरिगो। मानो अर्द्धचन्द्र को प्रकाश अर्द्धचन्द्रिकापै ह्वैकै चन्द्रचूर चन्द्रचूरपै बगरिगो ५० फरस जरीको नगजटित घटितमणि मंडित वितानब्रज भारीभीर भरिगो। कबिपजनेस कीट

कुण्डलकिशोर मुखमण्डल कपूरधूर धूंधर धुधरिगो। गोरीके गुलालभर्यो कुंकुमा यों लाग्यो जाग्यो बिथुरि उरोजपै अदाते सो बगरिगो। फेरितम मण्डल ब्रह्मण्डते उमण्डमानो अरुण उदोत हेमगिरिपै बगरिगो ५१ उमही किशोरी वृषभानकी हरवहोरी सोहैं सङ्ग गोरी बोरी केसरि मईमई। पिचकी जराव जरी भरी लालरंगनते मोहनके मुखदई छवि सों छईछई। कृष्णालाल ग्वालपै गुलालकी चलाईमूठितातेनभलाली भइ चञ्चला नईनई। बादलाके चूर परिपूर ह्वै लसत मानो रविचन्द जीतिकरिडार्यो है रईरई ५२ आजु ब्रजराज ब्रजमण्डल में खेलैं फागु रोरिन की भोरिन ठगोरिनपै डारिदेत। गेंदगुच्छ कुंकुमहजारी पिचकारी भरि भारीदम कलनि बिहारी परिचारि देत। कोऊ तहाँ भूल कोऊ मानत मनोज फूल कोऊ प्रीति मूल कहि सेवक सँवारिदेत। हालनको भेदन गुलालन की मूठि जौनबालनपै कबहूं मसालनपै डारि देत ५३ खेलत सुफाग महाराज ब्रजराज आज नाचैं बार अङ्गना सभामें छल छूटिछूटि। सेवक बखानै सुरसकल समाके मचे महतमनोजके मजाकी मौज लूटिलूटि। घूमिघूमि तालसों उझकि झुकि झुमिझुमि हाव भाव भूमिलौं बतावैं तान जूटिजूटि। पूतरीसी पातरी नगीसीपन्नगीसी नरी किन्नरीसी किन्नरीपरीसी परैं टूटि टूटि ५४ सवैया॥ चीरसुरंगी सजैं तनमें कर केसरिलै रघुबीर पै मेलती। दुल्लह चारु बनो अति सुन्दर देखिकै शोभा

नहीं पलफेरतीं। घूंघुट ओट गुलालकि चोट बचायके लालनपै रंगमेलती। धनिवै बनिता मनिता जगमें सजि कंतके संग बसन्तजे खेलती ५५ ॥ कबित्त ॥ फूलेतेपलाश है मशाल जगमगात सनें मन्दिर सोहातगीत कोकिलन गायोहै। बिबिध बरनके बनायो है बराती सब तन मन मोह्यो मधुआनँद बरसायो है। उडत गुलाल नभ बादर भयोहै लाल अबिराकी धूंधुरसों मराडप यों छायोहै। देखुरी सखी आजु गोरी दुलहिनि ब्याहिबेको धरिमौर बनरा बसन्त बनिआयोहै ५६ ॥ सवैया ॥ आली सुनी बनमाली बियोग पलाशके पुञ्जनको सुखभागो। पात सुखायगिरे महिआनि लतानिमें श्याम ताको रंग रागो। धीरधरे ठहरात न माधव मैनको जालिम जोर है जागो। भामिनी भौन में भागिचली फिरि आगि उठेगी धुआं उठैलागो ५७ ज्यौंत्यों रह्यो अबलौ जिय तौ अब आयो बसन्त कछू न बिसैहै। शीतलमन्द सुगन्धितबीर समीरनपीर गँभीर उठैहै। क्योंकरि प्राण रहैं तनमें जब कोकिला कूकिके कूक सुनैहै। औरन तेरो फबैगोकछू बलिसंग कुहूके तुहू कढ़िजैहै ५८ शोधे समीरनको सरदार मलिन्दन को मनसा फलदायक। किंशुकजालनको कलपद्रुम मानिनीबालनहूंको मनायक। कन्त अनन्त अनन्तकलीनको दीनन के मनको सुखदायक। साँचोमनोभवराजकोसाजसो आवतआज इतै ऋतुनायक ५९ बायुबहारि बहारिरहे क्षितिबीथी सुगन्ध न जात सिंचाई। त्यों मदमाते मलिन्दसबै जय

की करखानि रहे कछुगाई । मंगलपाठ पढ़ैं द्विजदेव सबै विधिसों सुखमा उपजाई । साजिरहे सबसाजघने बनमें ऋतुराजकी जानि अवाई ६० बौरे रसालन की चढ़ि डारन कूकत कोंलिया मौनगहैना । ठाकुर पुंजन कुञ्जन गुंजत भौरनकोचै चुपैबो चहैना । शीतल मन्द सुगन्धित बीर समीर लगे तन धीर रहैना । व्याकुल कीन्हो बसंत बनायकै जायकै कन्तसों कोऊ कहैना ६१ को बचिहै यहिबैरी बसन्त सों आवत योवन आगि लगावत । बौरतही करिडारत बौरीभरे बिषबैरी रसाल कहावत । होत करेजनकी किरचैं कबि देवजू कोकिल बैन सुनावत । बीर कि सों बल बीर बिना उड़ि जायँगे प्राण अवीर उड़ावत ६२ ए ब्रजचन्द चलो किन वा ब्रज लूकै बसन्त कि ऊकनलागीं । त्यों पदमाकर पेखो पलाशन पावक सी मनैां फूकन लागीं । वै ब्रजवारी बिचारीबधू बनवारी हियेलौं हूकनलागीं । कारी कुरूप कसाइनैं पै सुकुहू कुहू कौंलिया कूकन लागीं ६३ लखे सुखदानि परवानन जानि मयूरन देति भगाय भगाय । मने कैदियो पियरे पहिराव को गावँ में घ्राटे लगाय लगाय । भुलावतीं वाके हिये ते हरीहि कयान सें दास पराय पराय । कहा कहिये यहु पापी पपीहा व्यथा तन देत जगाय जगाय ६४ कवित्त ॥ बेलीरसरेली अलबेली नवलानसंग मुदितमनोज तरु तरुन बिहारेहैं । मंजु२ सुमन रसाल मंजरीनन पै पुंज२ गुंजत मलिन्द मतवारेहैं । मौनगति छोन दीन

पियबिन अंगहीन अधिक अधीनहीन बिकल निहारेहैं। राखत न चेत बिरहीननके चित्तचैत चैत चन्द चांदनी अचेत करि डारेहैं ६५ ॥ सवैया ॥ संगसखी के गई अलबेली महासुख सोवन बाग बिहारन। बाढ़े बियोग बिलासगये सब देखतही वेपलाश किडारन। जानि बसंत औ कंत बिदेश सखीलगी बावरीसी ह्वै पुकारन। च्वैचलिहैं चुरियां चलिआवरी आंगुरियां जनिलाउ अंगारन ६६ बैरी बसंतके आवतही बनबीच दवागिनि सीपजरैंगी। योगिनिसी बनिहैं बनमाल बियोगिनि कैसेकैं धीरधरैंगी। गुंजनवै अलिपुंजनकी सुनि कुंजन कौलिया कूककरैंगी। शूलसेफूले पलाशनकी डरियां डरपावनी दीठि परैंगी ६७ जबते ऋतुराज समाज रच्यो तबते अवली अलिकी चहकी। सरसायकैंसोर रसालकी डारिन कोकिल कूकैं फिरैं बहकी। रसिया बनफूले पलाशकरील गुलाबकिवास महासहकी। बिरही जनके दिलदागिबेको यहआगि दशों दिशिते दहकी ६८ देकहि सीर शिकारनको इहिबाग न कोयल आवनपावै। मूंदिझरोखन संदिर के मलयानिल आयन छावनपावै। आयेबिनारघुनाथ बसंतको सेवा न कोऊ सुनावन पावै।प्यारीको चाहौ जिआयोधमारितौ गांवमेंकोऊ न गावन पावै६९ धुंधरसी बनधूमसी गावनगावन तानलगे नर बौरी। बौरी लता बनिताभई बौरी सुओौधि अध्यायरही अबयोरी। बेनीबसंतके आवतहीं बिनकन्त अनन्तसहै दुखकोरी।

ओरीघरै हरिआयेन जी पहिलेहैं। ज्रैं झरिहै फिरि होरी ७० बीर अबीर अभीरनको दुखभाखे बनै नबनै बिनभाखै। त्यों पदमाकर मोहनमीत के पाये सँदेशन आठयें पाखै। आयेन आपन पातीलिखी मनकीमनहीं में रहीं अभिलाखै। सीतके अन्तबसन्त लग्यो अब कौनके आगे बसंतलै राखै ७१ ॥ कवित्त ॥ कुञ्ज कुञ्ज परतमाह गुंजरत पुंज अलिकूकै कोकिलानये कहांलौं दिनभरिबो। त्रिविध समीर हिये तीसरे लगन लागे उमँग्यो गँभीरपीर धीरकैसे धरिबो। कहैशिवनाथ आनि प्रगटेउ बसन्तऋतु बिन बनमाली आली भोज़रूर मरिबो। सेंबर अपारनमें किंशुककीडारनसे भयो कचनारनमें अँगारनको फरिबो ७२ आवछिरकायदे गुलाब कुंद केवड़ाको सेवती समीत्त बेला मालती पियारीमें। जूहीसोन जूहीजाय चम्पक कदम्ब अम्ब चम्पा औ चमेली गुलचांदनी नेवारीमें। शिवनाथबातको बिलोकिबो न भावैमोहिं पीवबिनआयो है बसंत फुलवारी में। भागिचलु भीतर अनार कचनारौंलग आगेउठी प्यारी गुल्लालाकी कियारीमें ७३ सवैया ॥ तोहिं बसन्तके आवतही मिलिहैं इतनी कहि राखी हितू जे। सो अब बूझतिहैं तुमसों कछु बूझे ते मेरे उदास न हूजे। काहे ते आये नहीं रघुनाथ ये आइके औधके बासरपूजे। देखु मधुव्रत गुंजे चहूंदिशि कोयल बोली कपोतऊ कूंजे ७४ जानतिही न बसन्त को आगम बैठिहि ध्यानधरे निजुपीको। एतेमेंकानन

ओरसों आइ कै कानन में पर्यो बोल पिकी को। है रघुनाथ कहाकहिये कहिआयो हाआयो गरो भरि-लौको। लोचन वारिजसों अंशुवाको अथाह बह्योपर-वाह नदीको ७५ बैठी बिसरातिही पिय आगम एतेमें कोयल को सुनिबानी। जागिउठी बिरहागि महा ल-खि मैं रघुनाथकी सोंह सकानी। चन्दनलाइ मिलाइ कपूरनि सांभरि सींच्यो गुलाब के पानी। कौन कहै बतियां निशिकौन तियाकीतऊ छतियासियरानी ७६ काज महा ऋतुराज बलीके यहै बनिआवत हैं लखते-ही। जातकह्यो न कहाकहिये रघुनाथकहै रसना इक एही। सालरसाल तमालहि आदि दै जेतिक वृक्षलता बनजेही। नौदलकोबेको कीन्हो बिचारतौके पतझार दियो पहिलेही ७७ ॥ कवित्त ॥ आयोहैं बसन्त कन्तवास कियो अंत लाग्यो मैन मारतन्त सुधि नेकौ नहीं अंग की। गावत धमारै ते अधिक उपचारैं आइ कोकिल पुकारैं मनो नैन भटजंगकी। होलीके जरतधीर केस्यो न धरत बनै ताही में परत है व्यथा को मनो संगकी। ओर नहिं चार सब थाको वै कमाल बाललीन तेहि काल गति पंजर पतंगकी ७८॥ सवैया ॥ फूटन कों पल कोप नई बिधि तूटत डारभरी सदभौरन। त्यों नवनीत सुगन्धनपागि चलै मिलि वायु सुठौरहीठौरन। कुन्दक-मोद कदम्ब कलीपर अम्बन तर्वादियेकरिभौंरन। कन्त बिना अब बीरबसन्तमें कौनउपायबचै किहितौरन ७९ बासर बीतिगयोबिधिके समरैनिबसन्तकीहै नियराई।

मेरुसो श्रंग उतंग रहो अब सो सम जानिपरै जियराई। नीर उसीर सों सीरी समीरसों सो बिरहागि नहींसिय राई। चन्द चढ़ो उदयाचलपै मुख चन्दपै आनिचढ़ी पियराई ८०॥ कवित्त॥ आयेरावरे ही तजिसहज स्वभाव जिन्हैं कहेनहीं जात कछुतिनके जेहालाहैं। द्विजबल-देव तौ बिलोक्यो तुम्हैं धीति नहीं नेकहू गनेज जिन शीत भीत पालाहैं। बिदित बसन्त तासों तन्त की बतायेदेत किंशुक कदम्ब कचनार कुंतजालाहैं। आज नन्दलालाकरलीन्हे मृगछालाहाला चम्पेकीसीमाला कुंभिलानी चारुबालाहैं८१॥ सवैया॥ कोकिलकेगरा कूकेलगे तिमिकोलनकी कलिका बिकसन्ती। फूलि उठीलतिका बलदेवजू लोपैलगी चलिलाज लसन्ती। कैसे रहैगो सुधीरज को दल मैन अनी घनी घेरी गसन्ती। बेधै लगे हियरो बिरहीनको बौरेबनै बनबाग बसन्ती ८२ गुंजत भौंर बिराग भरेबन बोलत चातक औपिक गाइके। फूले हैं टेसू कुसुम्भ जहाँ तहँ दौरत काम कमान चढ़ाइ के। डोलत बायुसुगन्ध समारख लागै हिये मलया गिरिलाइके। मेरे मनाये न मानैं बबाकिसों ऐहै बसन्त लैजैहै मनाइके ८३ अम्ब बसन्त में बौरहिंगे अरु कामिनि चन्दन चीररंगैहैं। डोलैंगे पवन सुगन्ध समारख कुंजलता सों लता लपटैहैं। योगी यती तपसो औ सती इनको बिरहानल आनि सतैहैं। ताहि छिना सखिप्राण तजौं जोपैकन्त बसन्तके तन्तनऐहैं ८४ ॥ कवित्त॥ फूले गुल्लालागुलाब कलियान

लागेताते मदन करत अतिसरसाई है। पवन के चले द्रुमपातझारिजात आली तामें मधुपुरीमें सिवहू सुधि-पाईहै। सुन्दर सुवास तन उत्तम अवासप्राय कुबिजा को रंगरूपनीको बनिआई है। ऊधोजी निपट अँदे-शोहै सँदेशो यहै कह्यो कूरकन्त सों बसन्त ऋतुआई है ८५ आंवनके बौरनकी ओपी शिरटोपीधरे कुरती पलाशनकीललित सोहायेहै। तरलतमालनकी छिचें तुपक तीर रजक पराग सों अधिक छवि छाये है। गोली से भवँर भोर बोली भाँति भाँतिनकी फूलोक-लियान में सुरौलहो जमायेहै। वीर बिरहिन के क-रेजरेज करिबेको आजुतौ बसन्त यो उजीर बनिआयो है८६॥सवैया॥आयो बसन्त भयोतनतन्त चल्यो दलकाम मतंगसेझूलें। चातक बासकियो बनप्रास पलासकी डारें अँगारसीफूलें। सेंवर फूलि अकाशलगे मनो झब्बा रँगे मखतूलकिझूलें। कौनसहै बिनकन्त सखीयेबसंत के तन्त के अन्तकी शूलें ८७ फूलिरहे बन बागदशौ दिशि कोकिल कुञ्जसों कुञ्ज घनेरहै। बोलैंमधुब्रत कुञ्जनमेंअरु डोलतपौन सुगन्ध सनेरहै। कबिचन्दजू चैतकी चांदनीचारुमें दम्पति को चितनित्तचुनेरहै। राधाकृष्ण जी रावरी राज्य में बारहू मास बसन्त बनेरहै ८८ फूले पलास बिलासथली बहु केशवदास प्रकासन घोरे। शेय अशेय मुखानलकी जनु ज्वाल बिशालचली दिबिबोरे। किंशुक श्री शुक तुण्डनकी रुचि राचे रसातल में चित चोरे। चंचुन चापि चहूं

दिशि डोलत चारु चकोर अँगारनभोरे ८९ ॥ कवित्त ॥
शीतल समीर सुभ गंगा के तरंग युत अम्बर बिहीन
बपु बासुकी लसंतहै। सेवत मधुपगण गजमुख परभृत
बोलसुनि होत सुखी सन्तश्री असन्तहै। अमलअदल
रूप मंजरी सुपदरजरंजित अशोक दुख देख तनसन्त
है। याकेराज दिशि दिशि फूलेहैं सुमनसब शिवको
समाज केधों केशव बसन्त है ९० और को सुखदभयो
हमको दुखद तूहै अदभुत गतितेरीकहो न परतिहै। औरन
को पोखै तोखै बास मकरन्दनसों राखै हमहीं को
अरेमोहींसों अरतिहै। प्रफुलित रसाल तापै होत ज्वाल
कासोंकहौं मेरे अँगअंगमें बिकल ता करतिहै। मानत न
सखियाते भयो बैशाख सबकोऊ नाम तेरो बैशाख-
ही धरत है ९१ नैनलाल कुसुम पलाश से रहे हैं फल
मालगरे माना बनझालरि सों लाई है। भवँर गुञ्जार
हरिनाम कोउचारतिमि कोकिलासों कुहंकि वियोग
राग गाई है। हरीचन्द तजि पत झार घर बार सबै
बौरी बनि दौरी चारुपौन ऐसी धाई है। तेरे बिछुरे
ते प्राणकन्त केहिमन्त अन्त तेरो प्रेमयोगिनी बसंत
बनिआईहै९२पीरोतन पर्योफूलो सरसों सरससाईमन
मुरझानो पतझार मानो लाईहै। सोरी श्वासत्रिविध
समीर सी बहतिसदा अँखियां बरसि मधुझारसी ल-
गाईहै। हरीचन्द फूलभन भौनके मसूसनसों ताहीसों
रसाल बाल बदिकै बौराईहै। तेरे बिछुरेते प्राणकंत
के हिमन्त अन्त तेरी प्रेम योगिनी बसन्त बनिआई

है ९३ ब्रज में बसन्त राग बागमें बसन्त बन बेलिन बसन्त सरसन्त आमें बौरमें। भनत दिवाकर समीर नीर तीर तीर बनिता बसन्त करदीन्हे और तौर में। ठौरठौर कोकिलको बोल अनमोल भयो बगरो बसन्त है मलिन्दन के भौर में। और और लौरलौर घरघर जहँ तहँ कियोहै बसन्त सलसन्त सब दौरमें ९४ चं-चरीक चंचल ह्वै गुञ्जत निकुञ्ज जहांचहुं चारुचमके चमेली फूलि फूलिके। तहां एक दीनद्याल सांवरो लख्यो रसाल आवत मतंग चाल चलो भूलि भूलि के। मन्दमुसकानि बीचयेरी चितखींचि लियो नाहिं ठहरात जात गात भूलि भूलि के। ईछन ह्वै तीछन निरीछन की कोरबांकी उठैं बरजोर मेरेहिये हूलि हूलिके ९५ आई है बहार बनबेलिन नबेलिन में ब-हुधा चमेलिन में भौंर भीर छाईहै। छाईहै छपाकर मरीचिका दरीचिन में तिनहू लखत कै अतन ताप ताईहै। ताईहै सकल सुधि बुधि यशवन्त मेरी जब ते पियरि प्राण प्यारी बिसराई है। राई है न नेककहूं नवमें कलेवरमें कहियो हो कान्त सों बसन्त ऋतुआईहै ९६॥ सवैया ॥ पीर है दूरि पपीहा बके मतजैये वहां जहां सौतिको तीरहै। तीरहै बैरि न बोलो यहां खवैरारन गुञ्जत भौंरकी भीर है। भीरहै धीरज राखिबेको प्रह-लाद बसन्त मनोज की बीरहै। बीरहैकोऊनहीं यहि गांवमें बूझत कोउ न काहू की पीरहै९७॥ कवित्त॥ फूलि रही माधुरी रसाललता माधुरी पलाशन धुरा धुरी

अनेक रंग घेरेहैं। शीतल सुगन्ध मन्द दक्षिणाके पौन मान मोचन नरिन्द हरि न छिणक नेरे हैं। प्रफुल्लित कुंजें बैगुलाब अलि गुंजें तेहि जोहन को मोहन परत पायँ मेरेहैं। हेरे क्योंन बन तन लाये कहा ऐसी रही तनहूं में अनगान ठनगनतेरे हैं ९८ डहडही मेरी मंजु डार सहकारकी पै चहचही चुहिल चुहूंकित अलीन की। लहलही लोनी लतालपटी तमालनपै कहकही तापै कोकिला की काकलीनकी। तहतही करिरस खानके मिलन हेत वह वही बानि तजि मानसमलीन की। महमही मन्द मन्द मारुत मिलनतैसी गहगही खिलनि गुलाबकी कलीनकी ९९ रोग सों असाधिन की औषधी का जानैं सब रसन की क्रिया सें प्रवीण मन भायो है। मेटत अजीरण को भूखनि बढ़ाइ देत नारिन के शोधिबेको भेद जानि भायो है। कलीना खिलत यहै पुरिया खुलति लाली भोगिन को देत सेवी सुख सों सोहायो है। रिझवार मोहनके आगे गुण प्रगटतआजु बनिदेखुरी बसन्तबैद आयोहै२०० फूलन के दोनों रचि साकलि सुमन सचि सान्यो मकरन्द चीकनोल्लै घृतसोतुहै। मेहामुनि ऋतुराज कामदेव बांचतहै खगहोमि सोहाकार डिजन के गोतु है। मदन गोपाल देवताकिपूजा कीजियतु सखीसुखबारी प्यारी तेज का उदोतु है। मधु कुण्ड माँझलाल देखु ये अगिनि झरैं आजु वृन्दाबनमें अनूठो होम होतु है १॥ सवैया॥ नील बसन्त उठे अकुलाय सुने कल को-

किल की किलकारी। भावरैंसी भरैं साँवरे साँवरेहोत निछावरि ते सहचारी। देवदूहू को दूहूं दुरिके रँगदै पठई अँग अंग उज्यारी। केसरियाखुलैं नन्द किशोर किशोरी कि केसरिकी रँगीसारी २ साजिबरातचले दशरत्थ प्रभामिथिलेशको पौंरिलसन्ती। हेमकेखम्भ जड़े मणि आदिक औ मुक्तानकी चौकपुरन्ती। गावतकोकिल बैनसखी परमेश भनैंसगरी गुणावन्ती। श्रीरघुवीरकेब्याहसमैंसित श्यामशरीरमें चीरबसन्ती ३भ्रमैं भूले मलिन्दन देखिनितै तनभूलिरहैं छिनभामिनियाँ। द्विजदेव जू डोले लतान चितैं हिये धीर धरैं किमि कामिनियाँ। हरि हाय बिदेशमें जाय बसे तजि ऐसे समय गजगामिनियाँ। मन बौरै न क्यों सजनी अबतौ बनबौरी बिसासिनि आबिनियाँ४आइ के काँपिकराहि उठीदृग आँशुन सीचि सकोच धरी है। लैकर कागद कोरो लला लिखिबे कहँ बैठी बियोग कथाख्वै। ऐसे में आनि कहूँ द्विज देव बसन्त बयारि कढ़ी तितहीह्वै। बातकी बातमें बौरीतिया अरु पीतह्वै पाती परी करसेच्वै ५ गे जबते उत नन्द लला तबते निजहाल न पूंछत कोई। तान तरंग तजो तुरतै बलदेव मिले पर आनँद होई। पाइ बसन्तन संत रहे मनका विधिसे निजभाव बिगोई। माल बिशाल दियो हित लाल भये बिरहाल यहीलय सोई ६॥
कबित्त॥ आवत बसन्तबेलि बागनमें फूलींसब पदुम पलाशे अलिवृन्द मनभायेहै। आनँद अरम्भकरि पक्षी

बन बोलतहैं त्रिविध समीर से सोहायो सुखपायोहै। तानन घुमन्त्रपद्धि बांसुरी बजाई हरि सुनि धुनि जैसे जोम तैसे उठिधायोहै। झपटि झरोखे बीच झाँकी बलदेव कहै ब्रजकी कुमारी श्रीबिहारी लखि पायो है ७ उदित प्रकाश आसपास देशदेशनमें द्विजबलदेव बात द्योतकी बतायेदेत। लहरैं समीरैं लोनी लतिका लवंगनकी लपटी लतान तरुणाई तरु तायेदेत। आवत तमासे ऋतुराजके समासे खासे परन पलाशनके पावक बसाये देत। जाहिरभो युवती जमातिकी जमूसी लखि जूटे जोर जुलमी मनोज को जगाये देत ८ हूजे लाजबाज गाज काजहै कहाँको साज आज ऋतुराज लैं समाजताज धै सचेत। द्विज बलदेव बनबागतौ निहारौ नेक बौरें करि डारैं डारैं डाकसी अधीर हेत। ह्वै है काह फेरि वैसैं फरसफबे हैं फैलि फहरैं पताके फौज फेरो झख केतखेत। चौगुन चढ़ावचाव चहकि चकोर उठे ठौरठौर कैलिया कुहूकैकरि हूकै देत ९ सेवती निवारसेत हीरन के हार जूही यूथ औ अनार मोती विद्रुम लसन्तभो। पन्ना पोखराज पच चम्पक समाजफाव माणिक गुलाबनील इन्दीवर गन्तभो। माधवी न सूनो गऊ मेदकल सनो दूनो औध बाटिका बजार पूनो बिलसन्तभो। यतन जलूस जोर रतन रसाल रंग अतन अनन्दहेत जौंहरी बसन्त भो १० फूले कचनार सहकार औ अपारबन शीतल सुगन्धमन्द मारुत कपायोरी। चन्दनके गार और सुमन सुगन्धसार हार

मुक्तान के बितान तनतायोरी। क्षेमकरण चंचरीक गंजैं औ कूजैंपिक आछे सेज असन बसन मोंन भाये री। आयो मधुमास मोहिं करै उपहाँस मधु मधुपुरमें माधव बसन्तहू न आयोरी ११ चहकि चकोर उठे शोरकरि भैांरउठे बोलि ठौर ठौर उठे कोकिल सुहा-वने। खिलि उठीं एकै बार कलिका अपार हिलि हिलिउठे मारुत सुगन्ध सरसावने। पलक न लागी अनुरागी इननैननपै लपटिगये धैां कबै तरुमनभावने। उमँगिअनंद आँशुवानलो चहूघालागे फूलिफूलि सुमन मलिन्द बरसावने १२ होनलागे शोर चहूं ओर प्रति कुञ्जनमें त्योंहीं पुञ्ज पुञ्जन पराग नभछायगो। फूल फल साजनके आयसु बिपिनमाहिं शीतलसुगन्धमंद पौन पहुंचायगो। द्विजदेव भूलेभूले फिरत मलिन्दन-की सुखमा बिलोकि हियेसुख सरसायगो। आयेहुते आगेते हरीलनके लोगइत आवत हमारे उत ऋतुपति आयगो १३ पल्लव पील पालकी नगारे कूक कोयल की सुमनसिपाही सैन्य साजिकै सिधायो है। मधुबन नकीब बोलैं बोलैं वायु चोपदार तोपदार तरुवर त-यारीकरि तायोहै। क्षेमकरण चांदनी चमकी चाव देतोहै लेतोहैअँकोरनाहिं हरबल शशिआयोहै। बैरी या बसन्त बरजोरी ब्रजराजबिन मदनमहीप सत मारै उठिधायो है १४ गावो किन कोकिल बजावो किन बेणु २ नाचैा किन भूमरि लतागण बने ठने। फेंकि फेंकिमारो किन निजकर पल्लवसों ललित लवंगफूल